

[2023] 4 एस. सी. आर 397

सिजू कुरियन

वी.

कर्नाटक राज्य

(2021 की आपराधिक अपील संख्या 64)

अप्रैल 17,2023

[सूर्या कान्ठ और अरविंद कुमार, जे. जे.]

दंड संहिता, 1860: एसएस। 302 , 201 , 404 और 419-परिस्थितिजन्य

साक्ष्य-अभियोजन मामले पर भरोसा कि अभियुक्त

पीड़ित के फार्महाउस में मजदूर ने पीड़ित की लोहे की छड़ से मारकर हत्या कर दी और फिर शव को बगीचे में स्थित एक गड्ढे में छिपा दिया-अन्य सामान भी छिपाए-आरोपी ने फार्म हाउस में सामान चुरा लिया और उन्हें बेच दिया और अनुचित आर्थिक लाभ के लिए जमीन भी बेच दी-निचली अदालत ने इस आधार पर बरी कर दिया कि

अभियोजन पक्ष अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा

हालांकि, उच्च न्यायालय ने आरोपी को दोषी ठहराया और सजा सुनाई यू/एस. एस. द्वारा दंडनीय अपराध। 302 , 201 , 404 और 419-अपील पर अभिनिर्धारित किया गया: मृतक की हत्या की स्थिति पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से साबित होती है-मुख्य गवाहों के साथ-साथ अभियोजन पक्ष के अन्य गवाहों ने भी गवाही दी कि आरोपी को आखिरी बार पीड़ित के साथ देखा गया था -

अभियुक्त के स्वैच्छिक बयान के आधार पर मृत शरीर की बरामदगी के साथ-साथ मृतक की वस्तुओं की बरामदगी, और अभियोजन पक्ष के गवाहों के माध्यम से भी साबित हुई-अभियुक्तों द्वारा बेची गई वस्तुएँ

अभियुक्त के स्वैच्छिक बयान के बल पर बरामद किया गया

निवेदन है कि स्वीकारोक्ति कथन को पूरी तरह से खारिज कर दिया जाए

स्वीकार नहीं किया जा सकता-यह भी नहीं कहा जा सकता है कि बयान स्वैच्छिक नहीं था या इसे अनुचित तरीके से दर्ज किया गया था। उच्च न्यायालय द्वारा लिया गया निष्कर्ष साक्ष्य की सही सराहना और कानून के उचित अनुप्रयोग पर आधारित है-उच्च न्यायालय के फैसले में कोई भौतिक अनियमितता नहीं है।

री पर

उच्च न्यायालय द्वारा उचित परिप्रेक्ष्य में पूरे साक्ष्य की सराहना, यह उचित रूप से अभिनिर्धारित किया गया था कि अकेले अभियुक्त ने ही अपराध किया था

पीड़ित की हत्या और कोई अन्य संभावित दृष्टिकोण नहीं है जिसे श्रृंखला के लिंक में गायब माना जा सकता है

परिस्थितियां-इस प्रकार, उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश ने साक्ष्य अधिनियम 1872 को बरकरार रखा। 8 , 25 और 27.

[2023] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

साक्ष्य अधिनियम, 1827: धारा 27-अभियुक्त से प्राप्त कितनी जानकारी साबित की जा सकती है-
आयोजित: धारा 27 अनुमति देती है कि -

ऐसा कोई स्वचालित अनुमान नहीं है कि अभिरक्षा संबंधी बयानों को मजबूरी के माध्यम से निकाला गया है। अभियुक्त द्वारा दिए गए स्वैच्छिक बयान में एक ऐसे तथ्य का पता लगाया जाना चाहिए जो केवल अभियुक्त की जानकारी में था -

ऐसी परिस्थितियों में, स्वैच्छिक कथन का वह भाग जो एक नए तथ्य की खोज की ओर ले जाता है जो केवल अभियुक्त के ज्ञान में था, यू / एस. 27-ऐसा कथन स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए था और उसमें बताए गए तथ्य दूसरों की जानकारी में नहीं होने चाहिए थे।

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973: एस. 378 - इसके खिलाफ अपील

दोषमुक्ति-अपीलीय न्यायालय की शक्तियाँ-सामान्य सिद्धांत-बताए गए।

याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा,

पकड़ना: 1.1 उच्च न्यायालय के लिए यह खुला रहेगा कि वह निचली अदालत द्वारा तैयार किए गए साक्ष्य और निष्कर्षों से फिर से अवगत कराए। निचली अदालत के फैसले के अभिलेख पर साक्ष्य के विपरीत होने की स्थिति में, ऐसी परिस्थितियों में उच्च न्यायालय निचली अदालत के निष्कर्षों में हस्तक्षेप करना और/या निचली अदालत के निष्कर्ष को उलटना उचित होगा। अपीलीय न्यायालय अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए बरी किए जाने के आदेश को उलट सकता है और संहिता में उच्च न्यायालय पर किसी सीमा या प्रतिबंध का कोई संकेत नहीं है।

अपीलीय न्यायालय के रूप में अपनी शक्ति का प्रयोग। उच्च न्यायालय की शक्ति के संबंध में कोई भेद नहीं किया जा सकता है

बरी किए जाने के आदेश की अपील और दोषसिद्धि की अपील के बीच की अपील। दंड प्रक्रिया संहिता उस साक्ष्य की व्यापक रूप से समीक्षा करने की शक्ति के प्रयोग पर कोई रोक नहीं लगाती है, जिसके आधार पर बरी करने का आदेश स्थापित किया गया था, और इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कि उस साक्ष्य पर बरी करने का आदेश होना चाहिए।

पलट जाएँ। [पैरा 13] [411-एफ; 412-बी-डी]

1.2 . राज्य द्वारा निर्भर परिस्थितिजन्य साक्ष्य

उन परिस्थितियों को साबित करने के लिए जो संक्षेप में अपराध करने के लिए अकेले अभियुक्त के अपराध की ओर इशारा करती हैं उच्च न्यायालय द्वारा दोष नहीं पाया जा सकता है। [पैरा 15] [413-एच; 414-ए] सिजू कुरियन बनाम।

1.3 . पीड़ित की मौत हत्या साबित हुई है।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के आधार पर। उक्त रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि मृत्यु 45-60 से कुछ दिन पहले हुई होगी। पोस्टमॉर्टम जाँच। पीडब्लू-22, डॉक्टर ने राय दी कि पीड़ित की मृत्यु मस्तिष्क रक्तस्राव के कारण हुई थी जो इसके कारण हुआ था।

माथे पर परिवर्तित फ्रैक्चर। उच्च न्यायालय द्वारा निकाले गए अप्रतिरोध्य निष्कर्ष, कि पीड़ित की मृत्यु हत्या थी, में दोष नहीं पाया जा सकता है। [पैरा 16] [414-बी, डी-ई]

1.4 . अभियुक्त के लिए निवेदन कि यह निर्णायक रूप से बताना संभव नहीं है कि वास्तव में क्या हुआ था, जिसके कारण

चश्मदीद गवाहों की कमी और इसलिए मृतक के गिरने और घायल होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है, यह एक ऐसा तर्क है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है और उच्च न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्ष की पुष्टि की जानी चाहिए। [पैरा 16.1] [414-ई-एफ]

1.5 . तथ्य यह है कि आरोपी को आखिरी बार कंपनी में देखा गया था

मृतक की गवाही पीडब्लू-10 और पीडब्लू-14 द्वारा दी जाती है। दो प्रमुख गवाहों के अलावा, पीडब्लू-5, पीडब्लू-7, पीडब्लू-9, पीडब्लू-10, पीडब्लू-11 और पीडब्लू-15 ने भी स्पष्ट रूप से और स्पष्ट शब्दों में बयान दिया कि आरोपी था।

मृतक के घर में उसकी मृत्यु के बाद आखिरी बार देखा गया। भले ही इनमें से एक गवाह पर विश्वास किया जाए कि क्या हुआ है।

सत्य पदच्युत कर दिया गया है, आवश्यक रूप से अभियुक्त पर यह जिम्मेदारी है कि वह धारा 313 Cr.P.C के तहत दर्ज अपने बयान में या इन गवाहों से प्राप्त स्वीकारोक्ति से संतोषजनक स्पष्टीकरण प्रदान करे, जिन परिस्थितियों में वह मामले में था।

मृतक की कंपनी। जब पीडब्लू-10 और पीडब्लू-14 ने स्पष्ट रूप से कहा है

कि उन्होंने अभियुक्त को मृतक के साथ देखा था, और इसके विपरीत अभियुक्त द्वारा कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिए जाने के कारण, यह अनिवार्य रूप से माना जाना चाहिए कि अभियुक्त उस पर डाले गए बोझ का निर्वहन करने में विफल रहा था। जब पीडब्लू-10 और पीडब्लू-14 ने स्पष्ट शब्दों में अभियुक्त को मृतक के साथ आखिरी बार देखा है, तो आवश्यक रूप से अभियुक्त को इस बारे में स्पष्टीकरण देना चाहिए कि उसने कैसे और कब अलग रहना शुरू किया और परिस्थितियों की श्रृंखला में आवश्यक रूप से कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है, इसलिए अभियुक्त के अपराध को दूर करने के लिए अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तावित अंतिम दृश्य सिद्धांत को स्वीकार करने की आवश्यकता है। [पैरा 16.5 और 16.6] [416-जी-एच; 417-ए; 418-बी-सी] [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

1.6 . अभियोजन पक्ष ने स्वैच्छिक बयान के आधार पर आरोपी के कहने पर शव की बरामदगी पर भरोसा किया, जिसे आरोपी ने अस्वीकार कर दिया है और जिसे अभियोजन पक्ष द्वारा साबित नहीं किया गया है। अभियुक्त। अभियुक्त के उक्त बयान को एक्स. पी.-2 से पीडब्लू-25 के रूप में चिह्नित किया गया है। उक्त बयान पीडब्लू-1, सीडब्ल्यू-3 और दुभाषिया-पीडब्लू-10 की उपस्थिति में दर्ज किया गया था। [पैरा 17] [418 डी-ई]

1.7 . धारा 27 घटनाओं के सामान्य क्रम में अभिरक्षा विवरण के व्युत्पन्न उपयोग की अनुमति देती है। ऐसा कोई स्वतः अनुमान नहीं है कि अभिरक्षा संबंधी बयान मजबूरी के माध्यम से निकाले गए हैं। एक तथ्य का पता चला है कि आरोपी द्वारा अपने प्रकटीकरण बयान में दी गई जानकारी एक प्रासंगिक तथ्य है और यह सबूत में केवल तभी स्वीकार्य है जब आरोपी के कहने पर कुछ नया पाया या बरामद किया जाता है जो प्रकटीकरण दर्ज करने से पहले पुलिस की जानकारी में नहीं था।

खोज कानूनी साक्ष्य होगा और बाकी को अस्वीकार किया जा सकता है अभियुक्त द्वारा यह निवेदन कि स्वीकारोक्ति कथन को पूरी तरह से त्याग दिया जाना है, एक से अधिक कारणों से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। सबसे पहले, अभियुक्त का आचरण भी एक प्रासंगिक तथ्य होगा जैसा कि धारा 8 में बताया गया है। [पैरा 18] [419-ए-डी]

1.8 . यह एक तुच्छ कानून है कि अभियुक्त द्वारा दिए गए स्वैच्छिक बयान के अनुसरण में, एक ऐसे तथ्य का पता लगाया जाना चाहिए जो केवल अभियुक्त की जानकारी में था। ऐसी परिस्थितियों में, स्वैच्छिक कथन का वह भाग जो एक नए तथ्य की खोज की ओर ले जाता है जो केवल अभियुक्त की जानकारी में था, धारा 27 के तहत स्वीकार्य हो जाएगा। इस तरह

बयान स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए था और उसमें बताए गए तथ्य दूसरों की जानकारी में नहीं होने चाहिए थे। जब पीडब्लू-10 के बयान पर विचार किया जाता है तो इसमें कोई संदेह नहीं रहेगा कि अभियुक्त का बयान स्वैच्छिक रूप से दर्ज किया गया है और जब बयान दर्ज किया जा रहा है।

अभियुक्त को ज्ञात भाषा नहीं, दुभाषिया सिजू कुरियन बनाम की सहायता।

कर्नाटक राज्य

यदि पुलिस द्वारा लिया जाता है तो इसमें दोष नहीं पाया जा सकता है। अभियुक्त द्वारा दिए गए कथित बयान का अंतिम परीक्षण, जैसा कि अभियुक्त द्वारा बताया गया है या नहीं, सर्वोपरि होगा। विचार करें। यदि उत्तर सकारात्मक है तो अनिवार्य रूप से कहा गया कथन को कानून की कसौटी पर उत्तीर्ण माना जाना चाहिए अन्यथा नहीं। केवल इसलिए कि अनुवाद मलयालम से तमिल में किया गया था और कन्नड़ में लिखा गया था, इसका मतलब यह नहीं है कि इस तरह के बयान को या तो स्वैच्छिक नहीं माना जाना चाहिए या उक्त बयान को अनुचित तरीके से दर्ज किया गया है। सिर्फ इसलिए कि पीडब्लू-10 को पढ़ना-लिखना नहीं आता था

मलयालम वास्तव में बयान की सामग्री को अविश्वसनीय नहीं बनाती है। दूसरी ओर, वह कहता है कि वह केरल से है और वह मलयालम बोलना जानता है। क्या जरूरत थी उसके द्वारा किया जाने वाला कार्य गवाह द्वारा अभियुक्त को बताए गए प्रश्न को प्रस्तुत करना था और ऐसे प्रश्नों के दिए गए उत्तरों को अभियुक्त द्वारा बताए गए अनुसार दर्ज करने के लिए पुलिस को बताया जाना था। वास्तव में, बयान की सामग्री के गलत होने के बारे में पीडब्लू-10 को कोई सुझाव भी नहीं दिया गया है। [पैरा 19] [420 बी-एच; 421-ए]

1.9 . इसमें कोई संदेह नहीं है कि साक्ष्य की धारा 25 को देखते हुए पीडब्लू-25 का स्वीकारोक्ति पूरी तरह से स्वीकार्य नहीं है।

एक्ट करें। हालाँकि, साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के साथ पठित धारा 8 के अनुसार, स्वीकारोक्ति का वह हिस्सा जिसके कारण पीडित के शव की बरामदगी स्वीकार्य हो जाएगी,

अभियुक्त के कहने पर बरामद मृतक की अन्य वस्तुओं के अलावा कई गवाहों द्वारा उनकी पहचान की गई है। स्वतंत्र रूप से। इसने उच्च न्यायालय को एक्स. पी.-2 के तहत दर्ज किए गए बयान को स्वीकार्य होने के रूप में स्वीकार करने के लिए भी राजी किया है जिसे अत्यधिक असंभव नहीं माना जा सकता है। अभियुक्त द्वारा दिए गए इकबालिया बयान के आधार पर कुछ वस्तुएँ बरामद की गईं और इस तरह की बरामदगी को साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष द्वारा गवाहों से पूछताछ की गई है और यह भी समझाया गया है

उच्च न्यायालय के निष्कर्षों को स्वीकार करने के लिए। [पैरा 20] [422 जी-एच; 423-ए-बी]

1.10 . आसपास की अन्य परिस्थितियाँ जो अभियुक्त को उचित संदेह से परे अपराध का दोषी साबित करती हैं, वे हैं मृतक से संबंधित वस्तुओं की बरामदगी और

अभियुक्त द्वारा बेचा गया जो [2023] 4 एस. सी. आर. के बल पर बरामद किया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अभियुक्त का स्वैच्छिक बयान। पीडब्लू-5 ने स्पष्ट रूप से बताया कि अभियुक्त का अचल संपत्ति को बेचने का इरादा कैसे था।

मृतक के लिए। पीडब्लू 5 ने स्पष्ट रूप से बयान दिया है कि आरोपी को पुलिस ने कैसे गिरफ्तार किया जब वह मृतक की संपत्ति बेचने का प्रयास कर रहा था। अभियुक्त द्वारा दिए गए बयानों के अलावा कि मृतक केरल गया था या मृतक को लकवा का दौरा पड़ा था या मृतक अमेरिका चला गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी, सभी गलत और परस्पर विरोधी बयान हैं जैसा कि पीडब्लू-5 द्वारा बयान किया गया है। उच्च न्यायालय द्वारा लिया गया निष्कर्ष साक्ष्य की उचित सराहना और कानून के उचित अनुप्रयोग पर आधारित है। अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य की उपेक्षा किए जाने और सत्र न्यायाधीश द्वारा साक्ष्य की सराहना में पेटेंट विकृति होने के कारण इसके परिणामस्वरूप उच्च न्यायालय द्वारा हस्तक्षेप किया गया। हस्तक्षेप का आह्वान करने वाले उच्च न्यायालय के फैसले में कोई भौतिक अनियमितता नहीं हुई है। उच्च न्यायालय द्वारा पूरे साक्ष्य को उचित परिप्रेक्ष्य में पुनः मूल्यांकन करने पर इसका परिणाम एक सही निष्कर्ष पर पहुंचा है। कि अकेले अभियुक्त ने मृतक की हत्या की और कोई अन्य संभावित दृष्टिकोण नहीं है जिसे परिस्थितियों की श्रृंखला के संबंध में गायब माना जा सके, अपील गुणदोष से रहित है। उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय को बरकरार रखा जाता है। [पारस 21-23] [428-G-H; 429-A-B, C-E]

शरद बर्डहिचंद सारदा बनाम। महाराष्ट्र राज्य (1984) 4 एससीसी 116: [1985] 1 एस. सी. आर. 88; शीओ स्वरूप बनाम। राजा सम्राट ए. आई. आर. 1934 पी. सी. 227; नरेश चंद्र दास

वी. सम्राट ए. आई. आर. 1942 (कैल) 593; पोहल्य मोत्य वाल्मी बनाम। महाराष्ट्र राज्य (1980) 1 एससीसी 530; अनवर पी. वी. वी. पी. के. बशीर (2014) 10 एससीसी 473; अर्जुन पंडितराव खोटकर बनाम। कैलाश कुषाणराव गोरंट्याल (2020) 7 एस. सी. सी. 1; कर्नाटक राज्य बनाम। सुवर्णम्मा (2015) 1 एस. सी. सी. 323: [2014] 10 एससीआर 778; पट्टू राजन बनाम तमिलनाडु राज्य (2019) 4 एससीसी 771: [2019] 5 एस. सी. आर. 535; राजस्थान राज्य बनाम काशी राम (2006) 12 एससीसी 254: [2006] 8 पूरक। एससीआर 501; ए. एन. वेंकटेश और अन्य। वी. कर्नाटक राज्य (2005) 7 एस. सी. सी. 714; गामिनी बाला कोटेश्वर राव बनाम। आंध्र प्रदेश राज्य ए. आई. आर. 2010 एस. सी. 589:

[2009] 14 एस. सी. आर. 1-संदर्भित।

सिजू कुरियन बनाम। कर्नाटक राज्य

चंद्रप्पा और अन्य बनाम। कर्नाटक राज्य (2007)

4 एससीसी 415 [2007] 2 एससीआर 630; मुरुगेसन बनाम। राज्य पुलिस निरीक्षक (2012) 10 एस. सी. सी. 383 के माध्यम से:

[2012] 13 एस. सी. आर. 1; मोहम्मद इनायतुल्ला बनाम। की स्थिति

महाराष्ट्र आकाशवाणी 1976 एससी 483: [1976] 1 एससीआर 715 -

पर भरोसा किया।

मामला कानून संदर्भ

[1985] 1 एससीआर 88

संदर्भित किया गया है

पै

रा 8.2

[2007] 2 एससीआर 630

पै

रा 8.2,1

उस पर भरोसा करें

[2012] 13 एससीआर 1

उस पर भरोसा करें

पै

रा 8.2,12

(1980) 1 एस. सी. सी. 530

पै

रा 8.2

संदर्भित किया गया है

(2014) 10 एस. सी. सी. 473

संदर्भित किया गया है

पै

रा 8.2

(2020) 7 एससीसी 1

पै

रा 8.2,9

संदर्भित किया गया है

[2006] 8 पूरका एससीआर 501

संदर्भित किया गया है

पै

रा 9,16.5

(2005) 7 एस. सी. सी. 714

संदर्भित किया गया है

पै

रा 9,18

[2014] 10 एससीआर 778

संदर्भित किया गया है

पै

रा 9,22

[2019] 5 एससीआर 535

संदर्भित किया गया है

पै

रा 9,22

[2009] 14 एससीआर 1

पै

रा 9

संदर्भित किया गया है

[1976] 1 एससीआर 715

उस पर भरोसा करें

पै

रा 18

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय: आपराधिक अपील सं।

64 2021 से।

उच्च न्यायालय के 20.03.2020 दिनांकित निर्णय और आदेश से
2014 की आपराधिक अपील संख्या 335 में बेंगलुरु पीठ में कर्नाटक सरकार
रंजीत बी. मरार, जुल्फिकार अली पी. एस., सुश्री लक्ष्मी श्री पी.
सुश्री लेबिना बेबी, अधिवक्ता। अपीलार्थी के लिए।

वी. एन. रघुपति, अधिवक्ता। उत्तरदाता के लिए।

23] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

अरविंद कुमार, जे।

1. यह अपील सर्वोच्च न्यायालय (आपराधिक अपीलिय क्षेत्राधिकार का विस्तार) अधिनियम, 1970 की धारा 2 (1) (ए) के तहत एकमात्र व्यक्ति द्वारा की गई है। फास्ट ट्रैक कोर्ट, सागर तालुक की फाइल पर 2012 के सत्र मामले में आरोपी, कर्नाटक उच्च न्यायालय द्वारा 2014 की आपराधिक अपील में फास्ट ट्रैक कोर्ट के फैसले के खिलाफ कर्नाटक राज्य द्वारा दायर किए गए एक फैसले से उत्पन्न होता है, जिसमें अपीलार्थी को भारतीय दंड संहिता (संक्षेप में 'आई. पी. सी.') की धारा 302, आई. पी. सी. की धारा 201, आई. पी. सी. की धारा 404 और आई. पी. सी. की धारा 419 के तहत दंडनीय अपराध के लिए बरी करने और दोषी ठहराने के आदेश को उलट दिया गया था।

आजीवन कारावास और संबंधित अपराधों के लिए 3 वर्ष/2 वर्ष की अवधि के लिए साधारण कारावास की सजा, जिसे समवर्ती रूप से चलाने का आदेश दिया गया है और जुर्माना भी लगाया गया है।

2. अभियोजन पक्ष द्वारा रखे गए मामले के संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार हैं:

अभियुक्त सागर तालुक (कर्नाटक राज्य) के केरोडी गाँव में श्री जोस कफन (मृतक) के फार्महाउस में मजदूर के रूप में काम कर रहा था और 6: 00 सुबह 6 बजे: 30 कहा जाता है कि आरोपी फार्महाउस के पूर्वी हिस्से से मृतक के कमरे में घुस गया था, जब वह सो रहा था और उसके चेहरे, बाईं भौंह और बाईं ठोड़ी पर लोहे की छड़ से मारकर उसकी हत्या कर दी थी।

फार्महाउस के पश्चिमी हिस्से में फार्महाउस से थोड़ी दूरी पर स्थित उद्यान भूमि। हत्या करने के लिए इस्तेमाल की गई लोहे की छड़, मृतक व्यक्ति की कमर की बेल्ट, उसकी पैंट, शर्ट को भी बगीचे में मिट्टी की ऊपरी परत के नीचे छुपाया गया था, जिसके बाद उसने खेत से चोरी किए गए उपकरण सुनील कुमार (सीडब्ल्यू-18) को बेचने के लिए बेच दिए थे और इसी तरह उसने अन्य सामान श्री को बेच दिए थे। डेनिस सी थॉमस (सीडब्ल्यू-20)। यह आरोप लगाया गया था कि बिक्री के माध्यम से जारी की गई उक्त राशि का आरोपी द्वारा बेईमानी से दुरुपयोग किया गया था। अभियोजन पक्ष द्वारा आगे यह आरोप लगाया गया है कि आरोपी ने खुद को मृतक व्यक्ति के बेटे के रूप में पेश करते हुए मृतक की जमीन दूसरों को बेचने का भी प्रयास किया था और अपने झूठे दावों को साबित करने के लिए मृतक के फार्महाउस के दस्तावेज भी सी. डब्ल्यू.-15 श्री लिजो को सौंप दिए थे और उसके बाद वह फरार हो गया था।

सिजू कुरियन बनाम। कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

आयोजित किया गया और आरोपी ने अपराध स्वीकार कर लिया और गवाहों की उपस्थिति में दिखाया कि शव को कहाँ छिपाया गया था। इसलिए, अभियोजन पक्ष ने इस तरह से आरोपी के पिता की हत्या कर दी थी शिकायतकर्ता ने मृतक का सामान बेच दिया और मृतक के स्वामित्व वाली भूमि के दस्तावेज सौंप दिए, खुद को मृतक का बेटा घोषित करते हुए और भूमि को अवैध रूप से दूसरों को बेचने का प्रयास किया था। जाँच पूरा होने पर अभियुक्त के खिलाफ संज्ञेय अपराध करने के लिए आई. पी. सी. की धारा 302, 201, 404 और 419 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए आरोप पत्र दायर किया गया। प्रभार

अभियुक्त के खिलाफ मामला दर्ज किया गया और उसे अस्वीकार कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप मुकदमा चलाया जा रहा था और अभियुक्त अभियोजन पक्ष के अपराध को घर ले जाने के लिए पीडब्लू-1 से पीडब्लू-25 के रूप में 25 गवाहों से पूछताछ की गई और एक्सपी-1 से पी-51 के अनुसार सामग्री साक्ष्य और एमओ 1 से एमओ 47 के रूप में सामग्री वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया। अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के समापन पर, दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत आरोपी व्यक्ति का बयान दर्ज किया गया और आरोपी ने दोषी नहीं होने का अनुरोध किया और निर्दोष होने के अपने रुख को भी दोहराया। विद्वान सत्र न्यायाधीश ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद निर्धारण के छह बिंदु/मुद्दे तैयार किए। विद्वत विचारण न्यायाधीश ने अभियुक्त को इस निष्कर्ष पर पहुँचकर बरी कर दिया कि अभियोजन पक्ष दिनांक 1 के निर्णय द्वारा अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा था। राज्य 2014 की उसी आपराधिक अपील सं. 335 से व्यथित है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क देते हुए बरी करने के उक्त आदेश का विरोध किया गया है कि सत्र न्यायाधीश साक्ष्य की सराहना करने में विफल रहे हैं और/या साक्ष्य की गलत सराहना की गई है और इस तरह आरोपी को दोषी ठहराया जाना चाहिए। यह भी तर्क दिया गया कि यद्यपि वस्तुओं की बरामदगी, अर्थात् भौतिक उद्देश्य अभियुक्त के कहने पर था और गवाहों की गवाही स्पष्ट रूप से अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन करती थी, फिर भी विद्वान सत्र न्यायाधीश ने अभियोजन पक्ष के मामले को गलत तरीके से अस्वीकार कर दिया था। यह भी कहा गया कि डॉक्टर पीडब्लू-22 के साक्ष्य पर उचित परिप्रेक्ष्य में विचार न करने के कारण सत्र न्यायालय द्वारा बरी करने का गलत आदेश पारित किया गया था। अन्य आधारों के अलावा, जैसा कि अपील ज्ञापन में आग्रह किया गया है, राज्य ने निचली अदालत द्वारा पारित बरी करने के आदेश को वापस लेने की मांग की। अभियोजन पक्ष के साथ-साथ अभियुक्त की ओर से उपस्थित संबंधित विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा दी गई दलीलों पर विचार करने के बाद उच्च न्यायालय ने

विचारण न्यायालय द्वारा अभिलिखित निष्कर्ष और अभियुक्त को [2023] 4 एस. सी. आर. के लिए दोषी ठहराया गया।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

आई. पी. सी. की धारा 302, 201, 404 और 419 के तहत दंडनीय अपराध और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई जैसा कि ऊपर पहले ही देखा जा चुका है। इसलिए यह अपील की गई है।

4. हम श्री के तर्क सुन चुके हैं। श्री जुल्फिकार अली पी. एस. के साथ अपीलार्थी की ओर से पेश हुए रंजीत B. Mararlearned वकील, सुश्री लक्ष्मी श्री पी., सुश्री लेबिना बेबी, अपीलार्थी/अभियुक्त के वकील और श्री V.N. Raghupathy, राज्य की ओर से उपस्थित विद्वान स्थायी वकील।

5. अपीलार्थी की ओर से पेश विद्वान वकील श्री रंजीत बी. मरार का तर्क है कि कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं है।

अभियुक्त की भूमिका के लिए और उच्च न्यायालय ने परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर दोषसिद्धि का आदेश दिया है। उन्होंने तर्क दिया है कि अभियोजन पक्ष परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर घटनाओं की श्रृंखला स्थापित करने में सक्षम नहीं है, जिससे सभी एक और एकमात्र निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, अर्थात् अभियुक्त का अपराध। वह प्रस्तुत करेगा कि दोषसिद्धि पूरी तरह से इकबालिया बयान के आधार पर की गई है जो कथित रूप से अपीलार्थी द्वारा साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के संदर्भ में पुलिस को दी गई थी। उक्त साक्ष्य विश्वसनीय नहीं है और इसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए था क्योंकि यह कन्नड़ भाषा में लिखा गया था जो आरोपी को पता नहीं था। उन्होंने तर्क दिया कि अभियोजन पक्ष के अनुसार आरोपी ने पी. डब्ल्यू.-10 की उपस्थिति में मलयालम में पुलिस स्टेशन में एक इकबालिया बयान दिया था, जिसने उसी का कन्नड़ में अनुवाद किया था और निर्विवाद रूप से पी. डब्ल्यू.-10 को कन्नड़ लिखना और पढ़ना नहीं आता था, लेकिन वह केवल कन्नड़ भाषा बोलने में सक्षम था और इस तरह इसका अनुवादित संस्करण था।

पुलिस के समक्ष अपीलार्थी का कथित स्वीकारोक्ति स्वीकार्य नहीं हो सका

अदालत। 6. उन्होंने यह तर्क देते हुए पीडब्लू 10 के साक्ष्य की ओर भी इस न्यायालय का ध्यान आकर्षित किया कि वह अभियोजन पक्ष के अन्य गवाहों के करीबी दोस्त हैं और उनके साक्ष्य पर विचार नहीं किया जाना चाहिए था। वह तर्क देगा कि अभियुक्त का इकबालिया बयान एक मुद्रित प्रारूप में था और यह पुलिस स्टेशन में अभियुक्त की उपस्थिति में टाइप नहीं किया गया था और यहां तक कि अभियोजन पक्ष के अनुसार यह पीडब्लू-10 द्वारा बताया गया था, जिसे सिजू कुरियन बनाम लिखा गया था।

7. वह आगे तर्क देगा कि शिकायतकर्ता पीडब्लू-4, जो मृतक का बेटा है, ने कहा था कि उसके पिता केरल में घर छोड़ गए थे अंत में 29.11.2011 पर और उन्होंने अपने पिता को एक बार 28.12.2011 पर एक पारिवारिक समारोह में आमंत्रित करने के लिए फोन किया था, जिस पर सहमति हो गई थी लेकिन मृतक केरल नहीं गए थे। वह तर्क देगा कि अभियोजन पक्ष के अनुसार मृतक की हत्या आरोपी द्वारा 02.12.2011 पर की गई थी जैसा कि कथित स्वीकारोक्ति बयान में कहा गया है और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, मृत्यु

आई. डी. 1 पर निष्कासन के दिनों से 45 से 60 दिन पहले हुआ था और इस तरह अभियोजन पक्ष की कहानी, जैसा कि अभियुक्त को जिम्मेदार ठहराया गया है, विश्वसनीय नहीं है और उसी के कारण यह एक गंभीर संदेह पैदा करता है और अभियोजन पक्ष के मामले में जो कमी आई है वह अस्पष्ट बनी हुई है, जो अभियोजन पक्ष की कहानी के लिए घातक थी।

8. उन्होंने आगे तर्क दिया कि अभियोजन पक्ष ने मुख्य रूप से 3 गवाहों पर भरोसा किया है-पी. डब्ल्यू.-1 (मजार गवाह), पी. डब्ल्यू.-2 (पूछताछ गवाह) और पी. डब्ल्यू.-10 (वह व्यक्ति जिसने आरोपी के खुलासे का अनुवाद किया) जो आरोपी द्वारा कथित रूप से मृतक के फार्महाउस से चोरी की गई सामग्री (एम. ओ.) की बरामदगी को साबित करता है। हमें लेकर इन गवाहों के बयान के लिए वह तर्क देगा कि वे पड़ोस में रहने वाले करीबी दोस्त हैं और इन तीनों गवाहों ने बरामदगी देखी थी और जब्ती उपाय और जांच रिपोर्ट को सत्यापित किया था और इस तरह उन्हें अभियोजन पक्ष के कहने पर लाए गए स्टॉक गवाहों के रूप में माना जाना चाहिए और उन्हें भरोसेमंद नहीं होने के कारण खारिज कर दिया जाना चाहिए था। वह यह भी तर्क देगा कि कहानी

अभियोजन पक्ष का कहना है कि आरोपी मृतक के फार्महाउस में एक कर्मचारी था जो साबित नहीं हुआ था। उन्होंने कहा कि अभियोजन पक्ष परिस्थितियों की श्रृंखला को साबित करने में विफल रहा है, जिसमें अंतिम बार देखे गए सिद्धांत भी शामिल हैं। वह तर्क देगा कि जब अभियुक्त से दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 (संक्षेप में 'द आई. डी. 1') के तहत पूछताछ की गई थी, तो उसके खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों का खंडन किया गया था, जिसमें उसके कहने पर मृत शरीर और अन्य भौतिक वस्तुओं की बरामदगी शामिल थी, इस निष्कर्ष पर पहुँचकर कि अभियोजन पक्ष अभियुक्त के अपराध को उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा था, अभियुक्त के रुख को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त था।

8.1 वह तर्क देगा कि आरोपी का मामला यह था कि जब उसे पुलिस द्वारा मौके पर लाया गया था तो पहले से ही कुछ लोग [2023] 4 एस. सी. आर. थे।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

ठीक उस स्थान पर खड़ा होना जहाँ शव को निकाला गया था और

अभियुक्त ने पुलिस को उस स्थान के बारे में नहीं बताया था और अभियुक्त की गिरफ्तारी से पहले ही पुलिस को उस स्थान के बारे में पता था। इसलिए, उच्च न्यायालय को अभियोजन मामले को गलत साबित करने का बोझ नहीं डालना चाहिए था। वह तर्क देगा कि दो कर्मचारी जो काम कर रहे थे

मृतक का फार्महाउस गायब था और कोई स्पष्टीकरण नहीं था

इस संबंध में अभियोजन पक्ष की ओर से जो कुछ भी सामने आया और इससे मृतक के कथित कृत्य के संबंध में गंभीर संदेह पैदा हुआ। वह तर्क देंगे कि अभियुक्त के मोबाइल का सी. डी. आर. सुरक्षित नहीं था और अभियोजन पक्ष द्वारा सबूत के रूप में पेश किया गया था जो अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक था।

8.2 वह तर्क देगा कि कथित इकबालिया बयान पूर्व। पी-2 को दो भागों में विभाजित किया जाना है: अर्थात् मृत शरीर की बरामदगी

और लेख और जिसमें बयान निर्विवाद रूप से पुलिस के समक्ष था और इस तरह अस्वीकार्य था। वह यह तर्क देते हुए प्रस्तुतियों को भी विस्तृत करेंगे कि जब निचली अदालत के निष्कर्षों को विकृत नहीं माना जा सकता है या उन पर पहुंचना संभव नहीं है, तो आवश्यक रूप से आरोपी को लाभ दिया जाना चाहिए जैसा कि इस अदालत के निर्णयों में कहा गया है और इस तरह उन्होंने निचली अदालत द्वारा पारित बरी करने के आदेश की पुष्टि करने के लिए अनुरोध किया है, जिसे तब से उच्च न्यायालय द्वारा उलट दिया गया है। वह तर्क देगा कि संदेह पर दोषसिद्धि कायम नहीं रखी जा सकती है और अभियोजन पक्ष अभियुक्त के अपराध को सभी उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा है और निम्नलिखित निर्णयों पर भरोसा करके वह अपील की अनुमति देने और निचली अदालत द्वारा पारित निर्णय को बहाल करने के लिए प्रार्थना करता है:

((i) शरद बर्धीचंद सारदा बनाम। महाराष्ट्र राज्य (1984)

((ii) शीओ स्वरूप बनाम। राजा सम्राट एयर 1934 पी. सी. 227,

((iii) चंद्रप्पा और अन्य बनाम। कर्नाटक राज्य (2007) 4

एससीसी 415,

((iv) मुरुगेसन बनाम। पुलिस निरीक्षक के माध्यम से राज्य (2012)

10 एससीसी 383,

((v) नरेश चंद्र दास बनाम। सम्राट ए. आई. आर. 1942 (कैल) 593,

((vi) पोह्ल्य मोत्य वाल्वी बनाम। महाराष्ट्र राज्य (1980) 1 एस. सी. सी. 530, सिजू कुरियन बनाम।

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

(vii) अनवर पी. वी. बनाम पी. के. बशीर (2014) 10 एस. सी. सी. 473,
(viii) अर्जुन पंडितराव खोटकर बनाम। कैलाश कुषाणराव गोरंठ्याल (2020) 7 एस. सी. सी. 1.

इसके विपरीत, राज्य द्वारा उपस्थित विद्वान स्थायी वकील श्री वी. एन. रघुपति उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय का समर्थन करेंगे। वह प्रस्तुत करेंगे कि जब विद्वान सत्र न्यायाधीश अपने समक्ष उपलब्ध साक्ष्य को देखने में विफल रहे थे या उपलब्ध साक्ष्य की गलती से सराहना की थी, तो इसके परिणामस्वरूप अपीलीय अदालत ने उक्त निष्कर्षों को उलटने के लिए अपने अधिकार क्षेत्र का प्रयोग किया था, जिसके लिए निष्कर्षों को दर्ज करते समय तर्क सौंपे गए थे। वह प्रस्तुत करेगा कि साक्ष्य की पुनः मूल्यांकन पर अपीलीय न्यायालय ने एक राय बनाई है कि रिकॉर्ड पर उपलब्ध सामग्री की गैर-सराहना की गई थी और उसी विषय पर चर्चा की गई थी।

9. वह प्रस्तुत करेगा कि जब्त किए गए मजार पी. डब्ल्यू.-3, पी. डब्ल्यू.-9, पी. डब्ल्यू.-11 के भौतिक गवाह अडिग रहे थे और उनके बयान में कोई स्पष्टीकरण नहीं आया था।

आई. डी. 1 की धारा 313 के तहत अभिलिखित अभियुक्त, उच्च न्यायालय ने उचित रूप से देखा है कि इस भौतिक साक्ष्य को विचारण न्यायालय द्वारा नजरअंदाज कर दिया गया था और अभिलेख पर उपलब्ध उक्त अनियंत्रित साक्ष्य के कारण वह इसे स्वीकार करने और अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए आगे बढ़ा है जो निष्कर्ष त्रुटि के दोष से ग्रस्त नहीं है। वह अदालत का ध्यान पीडब्लू-5 के साक्ष्य की ओर आकर्षित करेगा, जो आरोपी का दोस्त है, जिसने श्री बाबू को बेची जा रही मलबे को खोदने वाली मशीनों के बारे में बात की है।

(पीडब्लू-11) अर्थात् बहनोई-श्री। अधिवक्ता पीडब्लू-15 द्वारा तैयार किए गए समझौते के तहत लिजो (पीडब्लू-5)। उन्होंने तर्क दिया कि उक्त गवाह ने एक्स. पी.-15 के बारे में भी बात की है, जिसके तहत एम. ओ. 23 से 32 को जब्त कर लिया गया था, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह अभियुक्त द्वारा दिया गया था, इस प्रकार अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन करते हुए और यह तर्क देते हुए कि उच्च न्यायालय ने साक्ष्य का पुनः मूल्यांकन करने पर यह राय बनाई थी कि निचली अदालत ने भौतिक साक्ष्य की अनदेखी की थी और इस तरह उच्च न्यायालय के फैसले को बनाए रखने के लिए प्रार्थना की थी, जिसने निचली अदालत के निष्कर्ष को उलट दिया था, जिसमें आरोपी को बरी कर दिया गया था। अपनी प्रस्तुतियों के समर्थन में उन्होंने निम्नलिखित निर्णयों पर भरोसा किया है:

(i) राजस्थान राज्य बनाम काशी राम (2006) 12 एससीसी 254

((ii) ए. एन. वेंकटेश और अन्या। बनाम कर्नाटक राज्य (2005) 7 एससीसी

[2023] 4 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

(iii) कर्नाटक राज्य बनाम सुवर्णम्मा (2015) 1 एस. सी. सी. 323

(iv) पट्टू राजन बनाम तमिलनाडु राज्य (2019) 4 एस. सी. सी. 771।

(v) अर्जुन पंडितराव कोटकर बनाम कैलाश (2020) 7 एससीसी 1.

10. पक्षों की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ताओं को सुनकर और प्रतिद्वंद्वी पर सावधानीपूर्वक और चिंतित विचार करने के बाद बार में उठाए गए तर्कों पर हमारा विचार है कि निम्नलिखित बिंदु हमारे विचार के लिए उत्पन्न हो सकते हैं:

(क) क्या निचली अदालत के निष्कर्ष को उलटने वाले उच्च न्यायालय के फैसले को दो संभावित विचारों के आधार पर दरकिनार किया जाना है और निचली अदालत द्वारा लिया गया एक संभावित दृष्टिकोण है?

(ख) क्या उच्च न्यायालय का निर्णय गलत है और निचली अदालत द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्षों को उच्च न्यायालय द्वारा उक्त साक्ष्य की पुनः सराहना करते हुए गलत तरीके से उलट दिया गया है?

या

(ग) क्या उच्च न्यायालय ने उचित रूप से साक्ष्य की सराहना की है। या उच्च न्यायालय साक्ष्य पर विचार करने में विफल रहा था

उचित दृष्टिकोण?

चर्चा और खोज

11. जैसा कि यहाँ ऊपर तैयार किए गए बिंदु आपस में जुड़े हुए हैं और दर्ज किए जा रहे निष्कर्ष एक-दूसरे के साथ ओवरलैप होने की संभावना है, हमने उपरोक्त बिंदुओं पर संयुक्त रूप से विचार किया है और यहाँ नीचे उत्तर दिया है:

आरई: बिंदु 1 से 3

12. अपीलार्थी की ओर से उपस्थित विद्वान वकील द्वारा उठाई गई मुख्य दलीलों में से एक यह है कि उच्च न्यायालय को विचारण न्यायालय द्वारा पारित बरी किए जाने के फैसले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था और केवल विचारण न्यायालय के फैसले की स्थिति में विकृति से भरा हुआ था और विचारण न्यायालय द्वारा लिया गया दृष्टिकोण एक संभावित दृष्टिकोण नहीं था, इसे मुरुगेसन पंचम के मामले में इस न्यायालय के फैसले पर भरोसा करके उलट किया जा सकता था।

" 33. ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में "गलत", "गलत" और "संभव" अभिव्यक्तियों को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया गया है:

1 (2012) 10 एस. सी. सी. 383 सिजू कुरियन बनाम।

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

" गलत है। - गलत; गलत।

गलत है। - (1) सही या सच नहीं, गलत।

(2) अन्यायपूर्ण, बेईमान या अनैतिक।

संभव है। — (1) विद्यमान, घटित या प्राप्त किए जाने में सक्षम।

(2) यह मौजूद हो सकता है या हो सकता है, लेकिन यह निश्चित या संभावित नहीं है।

34. हमारे लिए इस बात पर जोर देना आवश्यक होगा कि एक संभावित दृष्टिकोण एक ऐसी राय को दर्शाता है जो ऐसी राय की शुद्धता या अन्यथा के बावजूद मौजूद हो सकती है या बनाई जा सकती है। पदानुक्रमित संरचना में निचली अदालत द्वारा लिए गए दृष्टिकोण को केवल असहमति पर एक वरिष्ठ अदालत द्वारा गलत या गलत कहा जा सकता है। लेकिन उच्च न्यायालय का ऐसा निष्कर्ष अधीनस्थ न्यायालय द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण को संभावित दृष्टिकोण के क्षेत्र से बाहर नहीं ले जाएगा। न्यायालय द्वारा पहुँचाए गए किसी भी निष्कर्ष की शुद्धता या अन्यथा का परीक्षण इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वरिष्ठ न्यायिक प्राधिकरण क्या सही निष्कर्ष मानता है। दूसरी ओर, एक संभावित दृष्टिकोण एक ऐसे निष्कर्ष को दर्शाता है जिस पर इस तथ्य की परवाह किए बिना यथोचित रूप से पहुँचा जा सकता है कि इस पर कहाँ सहमति है या नहीं।

उच्च न्यायालय। दोनों स्थितियों के बीच मौलिक अंतर को ध्यान में रखा जाना चाहिए। जब तक विचारण न्यायालय द्वारा लिया गया दृष्टिकोण उचित रूप से गठित किया जा सकता है, भले ही उच्च न्यायालय उसी से सहमत है या नहीं, द्वारा लिया गया दृष्टिकोण

निचली अदालत और उच्च न्यायालय को बाधित नहीं किया जा सकता है। विचारण न्यायालय के दृष्टिकोण से ऊपर और ऊपर प्रतिस्थापित किया गया। "

13. यह दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि उच्च न्यायालय के लिए यह खुला रहेगा कि वह विचारण न्यायालय द्वारा तैयार किए गए साक्ष्य और निष्कर्षों को फिर से अवगत कराए और निचली अदालत के निर्णय के अभिलेख पर साक्ष्य के विपरीत होने की स्थिति में, ऐसी परिस्थितियों में उच्च न्यायालय को निचली अदालत के निष्कर्षों में हस्तक्षेप करने और/या निचली अदालत के निष्कर्ष को उलटने में उचित ठहराया जाएगा। गामिनी में

ला कोटेश्वर राव बनाम आंध्र प्रदेश राज्य 2 यह आयोजित किया गया है

यह न्यायालय निम्नानुसार है:

" 14. हमने आगे की गई दलीलों पर विचार किया है और मामले को काफी देर तक सुना है। यह सच है, जैसा कि श्री राव ने तर्क दिया है कि निचली अदालत द्वारा दर्ज किए गए बरी किए जाने के खिलाफ अपील में हस्तक्षेप दुर्लभ और असाधारण परिस्थितियों में होना चाहिए। यह है,

आर. 2010 एससी 589 [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

हालाँकि, अब तक यह अच्छी तरह से तय हो गया है कि यह उच्च न्यायालय के लिए खुला है कि वह निचली अदालत द्वारा तैयार किए गए साक्ष्य और निष्कर्षों का पुनर्मूल्यांकन करे, लेकिन केवल उस मामले में जब निचली अदालत के फैसले को विकृत कहा जाता है। "विकृत" शब्द कानून में समझे जाने वाले शब्दों में

इसका अर्थ "साक्ष्य के भार के विरुद्ध" के रूप में परिभाषित किया गया है। हमें तदनुसार देखना होगा कि क्या निचली अदालत का निर्णय, जिसे उच्च न्यायालय द्वारा विकृत पाया गया है, वास्तव में ऐसा था।

अपीलीय न्यायालय अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए बरी किए जाने के आदेश को उलट सकता है और किसी भी मामले की संहिता में कोई संकेत नहीं है।

अपीलीय न्यायालय के रूप में अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए उच्च न्यायालय पर सीमा या प्रतिबंध लगा दिया गया हो। इस संबंध में कोई भेद नहीं किया जा सकता है

दोषमुक्ति के आदेश से अपील और दोषसिद्धि से अपील के बीच की अपील पर विचार करने में उच्च न्यायालय की शक्ति। दंड प्रक्रिया संहिता शक्ति के प्रयोग पर कोई बंधन नहीं लगाती है

उन साक्ष्यों की व्यापक रूप से समीक्षा करना जिन पर दोषमुक्ति का आदेश स्थापित किया गया था, और इस निष्कर्ष पर पहुंचना कि उस साक्ष्य पर दोषमुक्ति के आदेश को उलट दिया जाना चाहिए। शीओ स्वरूप बनाम राजा सम्राट 3 के मामले में, यह प्रिवी काउंसिल द्वारा निम्नानुसार आयोजित किया गया है:

लेकिन संहिता द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए और तथ्य पर अपने निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले, उच्च न्यायालय को हमेशा इस पर उचित महत्व देना चाहिए और विचार करना चाहिए।

मामला इस प्रकार है:

1) की विश्वसनीयता के बारे में विचारण न्यायाधीश के विचार/राय

गवाह;

3) अभियुक्त का किसी भी संदेह के लाभ का अधिकार; और

4) तथ्य के निष्कर्ष को बाधित करने में एक अपीलीय न्यायालय की धीमी गति एक न्यायाधीश द्वारा आई, जिसे गवाहों को देखने का लाभ मिला।

14. इस न्यायालय ने समय-समय पर बरी करने के आदेश के खिलाफ अपील पर विचार करते हुए अपीलीय न्यायालय की शक्तियों को दोहराया है 3 एयर 1934 पी. सी. 227 सिजू कुरियन बनाम।

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

चंद्रप्पा और आर. एस. बनाम कर्नाटक राज्य के मामले में सामान्य सिद्धांतों को निम्नलिखित प्रभाव से कम करने में सहायता करना:

अपीलीय शक्तियों के संबंध में सामान्य सिद्धांतों का पालन करना बरी किए जाने के आदेश के खिलाफ अपील पर सुनवाई करते हुए अदालत

उभरते हैं:

(1) अपीलीय न्यायालय के पास समीक्षा करने, पुनः मूल्यांकन करने की पूरी शक्ति होती है।

न्यायालय अपने स्वयं के निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले साक्ष्य पर, तथ्य और कानून दोनों के प्रश्नों पर।

(3) विभिन्न अभिव्यक्तियाँ, जैसे "सारवान और सम्मोहक"

कारण "", अच्छा और पर्याप्त आधार "", बहुत मजबूत "परिस्थितियाँ", "विकृत निष्कर्ष", "स्पष्ट गलतियाँ", आदि का उद्देश्य अपीलीय न्यायालय की व्यापक शक्तियों को कम करना नहीं है।

दोषमुक्ति के विरुद्ध अपील में। इस तरह के वाक्यांशों की अनिच्छा पर जोर देने के लिए "भाषा के विकास" की प्रकृति अधिक होती है।

एक अपीलीय अदालत बरी करने में हस्तक्षेप करने के बजाय कटौती करने के लिए

साक्ष्य की समीक्षा करने और अपने स्तर पर आने की अदालत की शक्ति

निष्कर्ष।

(4) तथापि, एक अपीलीय न्यायालय को यह ध्यान में रखना चाहिए कि

बरी होने के मामले में, पक्ष में दोहरी धारणा है अभियुक्त। सबसे पहले, आपराधिक न्यायशास्त्र के मौलिक सिद्धांत के तहत निर्दोषता का अनुमान उसके लिए उपलब्ध है कि प्रत्येक व्यक्ति को तब तक निर्दोष माना जाएगा जब तक कि वह किसी सक्षम अदालत द्वारा दोषी साबित नहीं हो जाता। दूसरा, अभियुक्त के बरी होने के बाद, उसकी बेगुनाही की धारणा को और मजबूत किया जाता है।

ट्रायल कोर्ट द्वारा पुनः पुष्टि और मजबूत किया गया।

(5) यदि आधार पर दो उचित निष्कर्ष संभव हैं

अभिलेख पर साक्ष्य के बारे में, अपीलीय न्यायालय को परेशान नहीं करना चाहिए

विचारण न्यायालय द्वारा अभिलिखित दोषमुक्ति का निष्कर्ष।

15. उपरोक्त पृष्ठभूमि में परिस्थितिजन्य साक्ष्य निर्भर थे।

राज्य द्वारा उन परिस्थितियों को साबित करने के लिए जो अपराध की ओर इशारा करती हैं

एससीसी 415 [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उच्च न्यायालय द्वारा संक्षेप में बताए गए अपराध को करने के लिए अकेले अभियुक्त को नीचे बताए गए कारणों से दोषी नहीं पाया जा सकता है:

16. श्री जोस सी. कफान की मौत हत्या साबित हुई है।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट एक्स. पी.-41 के आधार पर जो 21.01.2012 पर आयोजित की गई थी। उक्त रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि मृत्यु पोस्टमॉर्टम परीक्षा से कुछ दिन पहले हुई होगी। मृत शरीर का पोस्टमॉर्टम करने वाले डॉक्टर पीडब्लू-22, डॉक्टर कीर्तिराज ने 26.03.2013 पर आयोजित अपने मुख्य परीक्षण में इस प्रकार राय दी है:

" बाईं भौंह पर 2 इंच (लंबाई) का घाव

X 2 1/2 इंच (चौड़ाई) पाई गई और उक्त घाव के किनारों पर घाव पाए गए। वहाँ पर परिवर्तित फ्रैक्चर था

सामने की हड्डी जो उक्त घाव के नीचे आती है। बाईं आंख के नीचे यानी मैक्सिला हड्डी के हिस्से में सूजा हुआ घाव पाया गया जिसका मतलब है कि खून के थक्के का कुछ निशान ढाई इंच (लंबाई) मापा गया था।

(चौड़ाई)। "

X 1 1/2 इंच

पीडब्लू-22 ने राय दी है कि श्री जोस कफान की मृत्यु मस्तिष्क रक्तस्राव के कारण हुई थी जो मस्तिष्क पर परिवर्तित फ्रैक्चर के कारण हुई थी। माथे। मामले के उस दृष्टिकोण में और इस मुद्दे पर कोई गंभीर विवाद नहीं होने के कारण, उच्च न्यायालय द्वारा निकाले गए अप्रतिरोध्य निष्कर्ष, श्री जोस कफान की मृत्यु हत्या से हुई थी, में दोष नहीं पाया जा सकता है।

16.1 अभियुक्त के विद्वान वकील का तर्क कि यह निर्णायक रूप से बताना संभव नहीं है कि वास्तव में क्या हुआ था,

चश्मदीद गवाहों की कमी के कारण और इसलिए मृतक के गिरने और घायल होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है और उच्च न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्ष की पुष्टि की जानी चाहिए।

16.2 शृंखला में एक और परिस्थिति जो आई

"अंतिम दृश्य सिद्धांत" के संबंध में अभियोजन पक्ष द्वारा भरोसा किया जाता है। अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि मृतक श्री जोस कफान यहाँ रह रहे थे। केरोडी गाँव में उनकी उद्यान भूमि और सर्वेक्षण No.48 और 49 में कृषि गतिविधियों को चला रहा था। अभियोजन पक्ष का यह भी मामला है कि मृतक ने बगीचे की जमीन में ही एक घर बनाया था और उसमें रह रहा था। पीडब्लू-4 के रूप में जाँच के लिए आए मृतक के बेटे ने स्पष्ट शब्दों में बयान दिया है कि उसे उसके पिता ने सूचित किया था कि एक कर्मचारी की आवश्यकता के बारे में समाचार पत्र 'दीपिका' में एक विज्ञापन दिया गया था और उसी आरोपी के अनुसार सिजू कुरियन V. ने आवेदन किया था।

कर्नाटक राज्य

[अरविंद कुमार, जे।]

और उसे काम पर ले जाया गया था। उन्होंने अखबार की पहचान इस रूप में की है

Ex. P-28 और Ex. P-8 (a) के रूप में प्रासंगिक विज्ञापन।

16.3 यह तर्क देते हुए कि अभियोजन पक्ष यह साबित करने में विफल रहा कि आरोपी को मृतक द्वारा नियोजित किया गया था और न तो पीडब्लू-4 और न ही कोई अन्य

मृतक की भूमि। यह तर्क दिया जाता है कि अभियुक्त और मृतक को कभी एक साथ नहीं देखा गया था और विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज किया गया निष्कर्ष अच्छी तरह से तर्कपूर्ण है और विशेष रूप से पैराग्राफ 14,15,16 में दर्ज किए गए निष्कर्ष में उच्च न्यायालय द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए था। उच्च न्यायालय द्वारा देखी गई सच्चाई को झुठलाता है। पी. डब्ल्यू.-10 और पी. डब्ल्यू.-14 ने इस तथ्य की गवाही दी है कि आरोपी को आखिरी बार मृतक के साथ देखा गया था।

पीडब्लू-10 ने अपनी मुख्य परीक्षा दिनांक 26.02.2013 में निम्नलिखित प्रभाव बताया है।

कफान की लगभग 5-6 वर्षों से जान-पहचान है। जब उन्हें ऑटो रिक्शा की जरूरत होती थी, तो वे मुझे फोन करते थे। मैं उसे उसके खेत में छोड़ देता था। मुझे पता है कि कफान की भूमि कहाँ स्थित है। गवाह को Ex.P.31 और 32 दिखाया गया और उसने पहने हुए व्यक्ति की पहचान की जोस कफान के रूप में बैंगनी रंग की शर्ट। लोग काम करने के लिए जमीन पर जाते थे। मैंने आरोपी को कफान के स्थान पर देखा है।

आरोपी वहाँ काम करता था।

21.01.2012 पर, सुंदर नामक एक दफेदार ने मुझे बताया कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को चाहता है जो मलयालम जानता हो और उसने मलयालम भाषा से अनुवाद करने के लिए उसके साथ जाने का अनुरोध किया। मैं सागर गया।

ग्रामीण स्टेशन। मुझे स्टेशन पर ले जाया गया और Dy.S.P स्टेशन में था। " आरोपी को मुझे दिखाया गया और पूछा गया कि क्या मैं

अभियुक्त का परिचय है और मैंने उसकी पहचान कर ली है

आरोपी और कहा कि वह बगीचे की जमीन में काम कर रहा था

कफान का। पुलिस ने XXX को पुलिस को सूचित किया। द.

अभियुक्त ने कहा कि 02.12.2011 पर जब कफान सो रहा था

6 : 00-6 : 30 बगीचे की जमीन में उसके घर में, मैंने लोहे की छड़ से उसके सिर पर हमला करके उसकी हत्या कर दी। आधे घंटे बाद जब मैंने उसका हाथ उठाया और गिरा दिया, तो वह नीचे की ओर गिर गया और बाद में मुझे पृष्ठि हुई [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

कि वह मर चुका है और फिर अपने मृत शरीर को चादर से लपेटकर दफना दिया। उन्होंने कहा है कि घर के पीछे एक खाद का गड्ढा था और उन्होंने शव को उसी खाद के गड्ढे में दफनाया है।

उन्होंने बताया कि अपने शव को दफनाने के बाद वह वहीं रह रहे थे

केवल। उसने कहा कि उसने उपकरण बेचकर पैसा कमाने के लिए हत्या की थी। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने जमीन बेचने के बारे में भी सोचा था। आरोपी ने कहा कि वह उस जगह को दिखाएगा जहां उसने शव को दफनाया है और लोगों को दिखाएगा कि वह किसे दफनाया है। उपकरणों को बेच दिया है।

16.4 पीडब्लू-14 एक अन्य गवाह है जिसकी गवाही दी गई है।

परिस्थितियों की श्रृंखला में उच्च न्यायालय द्वारा निर्भरता अर्थात् अंतिम बार देखे गए सिद्धांत। पी. डब्ल्यू.-14 ने अपनी मुख्य परीक्षा दिनांक 12.03.2013 में निम्नलिखित प्रभाव बताया है:

मलयालम और कफन कन्नड़ नहीं जानते थे और इसलिए दीपक गौड़ा मुझे जे. सी. वी. के लिए पैसे और काम के बारे में बात करने ले गए। फिर मुझे कफन का परिचय हुआ। गवाह को EX.P.31 और 32 दिखाया गया और उसने पहने हुए व्यक्ति की पहचान की

श्री के रूप में बैंगनी रंग की शर्ट। जोस कफान। उसके बाद हम उनके बगीचे में गए थे। उन्होंने मुझे बताया कि वह श्रमिकों को चाहते हैं क्योंकि उनके बगीचे की जमीन में काम करने के लिए कोई श्रमिक नहीं हैं। इसलिए, मुझे उसके लिए एक कर्मचारी मिला, लेकिन वह यह कहते हुए केरल वापस चला गया कि वह महसूस नहीं कर रहा है

आरामदायक। बाद में सितंबर 2011 के महीने में एक विज्ञापन दिया गया जिसके माध्यम से उन्हें एक कर्मचारी मिला। वह कर्मचारी जब हम वहाँ गए तो घर में थे। गवाह।

उस व्यक्ति की पहचान करता है जो श्री जोस कफान के साथ था

अभियुक्त। श्री जोस कफान ने बताया कि उनकी कोई पहचान नहीं है

इस जगह का कार्ड और अपना पता देकर अपने कार्यकर्ताओं के लिए सिम लेने के लिए कहा। तदनुसार मैंने उसे एक सिम कार्ड दिया।

16.5 इन दो प्रमुख गवाहों के अलावा, पीडब्लू-5, पीडब्लू-7, पीडब्लू-9, पीडब्लू-10, पीडब्लू-11 और पीडब्लू-15 भी स्पष्ट रूप से और स्पष्ट शब्दों में हैं। अपदस्थ किया कि आरोपी को उसकी मृत्यु के बाद मृतक के घर में आखिरी बार देखा गया था। अगर इनमें से एक गवाह पर भी विश्वास किया जाए कि जो बयान दिया गया है वह सच है, तो आवश्यक है कि आरोपी पर संतोषजनक स्पष्टीकरण देने की जिम्मेदारी है या तो आई. डी. 1 की धारा 313 के तहत दर्ज अपने बयान में या इनसे प्राप्त स्वीकारोक्ति से।

गवाह, वे परिस्थितियाँ जिनमें वे सिजू कुरियन बनाम की संगति में थे।

मृतक। जब पीडब्लू-10 और पीडब्लू-14 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्होंने आरोपी को मृतक के साथ देखा था, और इसके विपरीत आरोपी द्वारा कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिया गया था, तो यह अनिवार्य रूप से माना जाना चाहिए कि आरोपी उस पर डाले गए बोझ का निर्वहन करने में विफल रहा था। साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 स्पष्ट रूप से बताती है कि जब कोई तथ्य विशेष रूप से किसी व्यक्ति के ज्ञान में होता है, तो बोझ उस तथ्य को स्वीकार करना उस पर है, अर्थात् ऐसे व्यक्ति पर। राजस्थान राज्य बनाम काशीराम 3 के एक मामले में इस न्यायालय ने निर्णय दिया है:

" 16. सबसे महत्वपूर्ण परिस्थिति कि प्रतिवादी को आखिरी बार मृतक के साथ 3-2-1998 पर देखा गया था, जिसके बाद वह गायब हो गया था और उसका घर बंद पाया गया था और वह था

किसी भी तरह का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया, उच्च न्यायालय ने एक छोटे से पैराग्राफ में यह कहते हुए निपटारा कि अगर आरोपी को उसके घर में उसके अपने परिवार के सदस्यों के साथ देखा गया तो कुछ भी असामान्य नहीं था। इस तरह के तर्क पर, उच्च न्यायालय ने माना कि अभियोजन पक्ष द्वारा भरोसा किया गया परिस्थितिजन्य साक्ष्य प्रतिवादी की दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था। तदनुसार, उच्च न्यायालय ने प्रतिवादी द्वारा की गई अपीलों को स्वीकार कर लिया और मुकदमे द्वारा किए गए मृत्यु संदर्भ को अस्वीकार कर दिया

मौत की सजा की पुष्टि के लिए अदालत "।

" 23. अधिकारियों के साथ गुणा करना आवश्यक नहीं है। सिद्धांत अच्छी तरह से तय किया गया है। साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के प्रावधान अपने आप में स्पष्ट और स्पष्ट हैं कि जब कोई तथ्य विशेष रूप से किसी व्यक्ति के ज्ञान में होता है, तो उस तथ्य को साबित करने का बोझ उस पर होता है। इस प्रकार, यदि किसी व्यक्ति को आखिरी बार मृतक के साथ देखा जाता है, तो उसे इस बारे में स्पष्टीकरण देना चाहिए कि उसने कंपनी कैसे और कब अलग की। उसे एक ऐसा स्पष्टीकरण देना चाहिए जो अदालत को संभावित और संतोषजनक लगे। यदि वह ऐसा करता है तो उसे अपने बोझ का निर्वहन करने के लिए माना जाना चाहिए। यदि वह अपने विशेष ज्ञान के भीतर तथ्यों के आधार पर स्पष्टीकरण देने में विफल रहता है, तो वह साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 द्वारा उस पर डाले गए बोझ का निर्वहन करने में विफल रहता है। परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित किसी मामले में यदि अभियुक्त उस पर लगाए गए बोझ के निर्वहन में उचित स्पष्टीकरण देने में विफल रहता है, तो वह स्वयं मामले में एक अतिरिक्त कड़ी प्रदान करता है।

परिस्थितियों की श्रृंखला उनके खिलाफ साबित हुई। धारा 106 आपराधिक मुकदमे में सबूत के बोझ को स्थानांतरित नहीं करती है, जो हमेशा ऊपर होता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अभियोजन पक्ष। यह नियम निर्धारित करता है कि जब अभियुक्त ऐसा करता है उन तथ्यों पर कोई प्रकाश न डालें जो विशेष रूप से उनके ज्ञान में हैं और जो उनकी निर्दोषता के अनुरूप किसी भी सिद्धांत या परिकल्पना का समर्थन नहीं कर सकते हैं, अदालत उनकी विफलता पर विचार कर सकती है।

किसी भी स्पष्टीकरण को जोड़ने के लिए, एक अतिरिक्त कड़ी के रूप में जो श्रृंखला को पूरा करती है। नैना मोहम्मद में इस सिद्धांत को संक्षेप में बताया गया है। ,

री. [ए. आई. आर. 1960 मैड 218: 1960 क्रि एलजे 620] "

16.6 इस प्रकार, जब पीडब्लू-10 और पीडब्लू-14 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्होंने आरोपी को आखिरी बार मृतक के साथ देखा था, तो अनिवार्य रूप से आरोपी हैं।

उसे इस बारे में स्पष्टीकरण देना चाहिए कि उसने कैसे और कब अलग रहना शुरू किया और इसकी श्रृंखला में आवश्यक रूप से कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।

परिस्थितियों में, अभियुक्त के अपराध को घर पहुँचाने के लिए अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तावित अंतिम सिद्धांत को स्वीकार करने की आवश्यकता होती है।

17. फिर भी एक और परिस्थिति जो अभियोजन पक्ष के पास है

स्वैच्छिक बयान के आधार पर अभियुक्त के कहने पर मृत शरीर की बरामदगी पर भरोसा किया जाता है, जिसे अभियुक्त द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है और अभियुक्त की ओर से पेश विद्वान वकील के अनुसार अभियोजन पक्ष द्वारा यह साबित नहीं किया गया है। अभियुक्त के उक्त बयान को एक्स. पी.-2 से पीडब्लू-25 के रूप में चिह्नित किया गया है। उक्त बयान श्री बालकृष्ण की उपस्थिति में दर्ज किया गया था।

गुलेड पीडब्लू-1, श्री राजू सीडब्ल्यू-3 और दुभाषिया श्री कुंजली, पीडब्लू-10।

17.1 . यह तर्क दिया गया है कि पूछने में अपनाई गई प्रक्रिया

पी. डब्ल्यू.-10 श्री कुंजली ने अपीलार्थी-अभियुक्त से सवाल पूछे हैं, जिनके जवाब पी. डब्ल्यू.-10 श्री कुंजली ने दिए हैं, जो कहते हैं कि उन्हें मलयालम पढ़ना और लिखना नहीं आता था और फिर भी पुलिस ने उनसे कन्नड़ में सवाल पूछे थे, जिन्होंने मलयालम में अनुवाद किया था और मलयालम में अभियुक्तों से जवाब प्राप्त किए थे और कहा कि जवाब पी. डब्ल्यू.-10 द्वारा तमिल में अनुवाद किया गया था और इसे पुलिस द्वारा कन्नड़ में टाइप किया गया था जो एक अभियुक्त के इकबालिया बयान को दर्ज करने का एक असामान्य तरीका है और इस तरह का इकबालिया बयान एक्स. पी.-2 साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत स्वीकार्य सबूत नहीं था। उक्त तर्क की जांच करने के लिए हम इसे उचित समझते हैं।

साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 को निकालने के लिए और इसमें कहा गया है:

" 27. अभियुक्त से प्राप्त कितनी जानकारी साबित हो सकती है। -बशर्ते कि, जब किसी अपराध के अभियुक्त व्यक्ति से प्राप्त जानकारी के परिणामस्वरूप किसी तथ्य को पुलिस अधिकारी की अभिरक्षा में

अपदस्थ किया जाता है, तो ऐसी जानकारी का इतना हिस्सा, चाहे वह स्वीकारोक्ति के बराबर हो या सिजू कुरियन VI

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

नहीं, जैसा कि इस प्रकार खोजे गए तथ्य से स्पष्ट रूप से संबंधित है, हो सकता है साबित कर दिया "।

18. धारा 27 घटनाओं के सामान्य क्रम में अभिरक्षा विवरण के व्युत्पन्न उपयोग की अनुमति देती है। कोई स्वचालित धारणा नहीं है कि

अभिरक्षा संबंधी बयान मजबूरी के माध्यम से निकाले गए हैं। एक तथ्य का पता चला है कि अभियुक्त द्वारा अपने प्रकटीकरण बयान में दी गई जानकारी एक प्रासंगिक तथ्य है और यह सबूत में केवल तभी स्वीकार्य है जब अभियुक्त के कहने पर कुछ नया पाया जाता है या बरामद किया जाता है जो अभियुक्त का प्रकटीकरण बयान दर्ज करने से पहले पुलिस की जानकारी में नहीं था। पुलिस हिरासत में रहते हुए दर्ज किए गए आरोपी के बयान को इसके घटकों में विभाजित किया जा सकता है।

और स्वीकार्य भागों से अलग किया जा सकता है। उन घटकों या हिस्सों में से जो खोज का तत्काल कारण थे

यह कानूनी सबूत होगा और बाकी को मोहम्मद इनायतुल्ला बनाम महाराष्ट्र राज्य के माध्यम से खारिज किया जा सकता है। इस पृष्ठभूमि में जब हम अपना ध्यान तथ्यों के साथ-साथ अभियुक्त द्वारा उठाए गए इस तर्क की ओर मोड़ते हैं कि स्वीकारोक्ति कथन को पूरी तरह से त्याग दिया जाना है, तो इसे एक से अधिक कारणों से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। सबसे पहले, अभियुक्त का आचरण भी एक प्रासंगिक तथ्य होगा जैसा कि धारा 8 में बताया गया है। ए. एन. वेंकटेश और एक अन्य मामले में यह अदालत। बनाम कर्नाटक राज्य ने निम्नलिखित प्रभाव को कायम रखा है:

" 9. साक्ष्य अधिनियम की धारा 8 के आधार पर,

अभियुक्त व्यक्ति प्रासंगिक है, यदि ऐसा आचरण प्रभावित करता है या है

मुद्दे में किसी भी तथ्य या प्रासंगिक तथ्य से प्रभावित। परिस्थितियों का सबूत, सरलतर, कि अभियुक्त ने पुलिस अधिकारी को बताया कि जिस स्थान पर अपहृत लड़के का शव मिला था और उनके द्वारा शव को बाहर निकालने पर, धारा 8 के तहत आचरण के रूप में स्वीकार्य होगा, चाहे वह कुछ भी हो।

तथ्य यह है कि क्या अभियुक्त द्वारा दिया गया बयान

समकालीन रूप से इस तरह के आचरण के साथ या पूर्ववर्ती धारा 27 के दायरे में आता है या नहीं जैसा कि इस न्यायालय ने प्रकाश में अभिनिर्धारित किया है।

चंद बनाम। राज्य (दिल्ली प्रशासन) [(1979) 3 एससीसी 90: 1979 एस. सी. सी. (सी. आर. आई) 656: ए. आई. आर. 1979 एस. सी. 400] भले ही हम मानते हैं कि प्रकटीकरण

अभियुक्त द्वारा दिया गया बयान-अपीलार्थी (बहिष्कृत)। पी-15 और पी-16) साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत स्वीकार्य नहीं है, फिर भी यह है धारा 8 के तहत प्रासंगिक। जाँच अधिकारी का साक्ष्य

6 आकाशवाणी 1976 एससी 483
सी. आर.

7 (2005) 7 एससीसी 714 [2023] 4 एस.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और पीडब्लूएस 1,2,7 और पीडब्लू-4 मौके पर मजार गवाह है कि आरोपी उन्हें मौके पर ले गए थे और जगह की ओर इशारा किया था

जहाँ मृत शरीर को दफनाया गया था, वह अभियुक्त के आचरण के रूप में धारा 8 के तहत एक स्वीकार्य साक्ष्य है। ए-1 और ए-2 की उस स्थान पर उपस्थिति जहाँ फिरौती की मांग पूरी की जानी थी और पुलिस दल को देखकर भागने की उनकी कार्रवाई एक प्रासंगिक परिस्थिति है और साक्ष्य की धारा 8 के तहत स्वीकार्य है।
एक्ट करें।

19. यह एक तुच्छ कानून है जो एक स्वैच्छिक बयान के अनुसरण में है।

अभियुक्त द्वारा बनाए गए एक ऐसे तथ्य का पता लगाया जाना चाहिए जो केवल अभियुक्त की जानकारी में था। ऐसी परिस्थितियों में, स्वैच्छिक कथन का वह भाग जो एक नए तथ्य की खोज की ओर ले जाता है जो केवल अभियुक्त की जानकारी में था, धारा 27 के तहत स्वीकार्य हो जाएगा। इस तरह का बयान स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए था और उसमें बताए गए तथ्य दूसरों की जानकारी में नहीं होने चाहिए थे। इस पृष्ठभूमि में जब पीडब्लू-10 के बयान पर विचार किया जाता है तो हमारे मन में कोई संदेह नहीं रहेगा कि आरोपी (एक्स. पी.-2) का बयान स्वैच्छिक होने के कारण दर्ज किया गया है और जब बयान उस भाषा में दर्ज किया जा रहा है जो आरोपी को ज्ञात नहीं है, तो दुभाषिया की सहायता में अगर पुलिस द्वारा लिया गया है तो उसे दोष नहीं पाया जा सकता है। द. अभियुक्त द्वारा दिए गए उक्त कथन का अंतिम परीक्षण, जैसा कि अभियुक्त द्वारा बताया गया है या नहीं, सर्वोपरि विचार का विषय होगा। यदि उत्तर सकारात्मक है तो अनिवार्य रूप से कहा गया कथन को कानून की कसौटी पर उत्तीर्ण माना जाना चाहिए अन्यथा नहीं। केवल इसलिए कि अनुवाद मलयालम से तमिल में किया गया था और कन्नड़ में लिखा गया था, इसका मतलब यह नहीं है कि इस तरह के बयान को या तो स्वैच्छिक नहीं माना जाना चाहिए या उक्त बयान को अनुचित तरीके से दर्ज किया गया है। दुभाषिया ने गवाह के डिब्बे में प्रवेश किया और खुद को जिरह के लिए प्रस्तुत किया, जिसके परिणामस्वरूप उसके साक्ष्य को त्यागने के लिए कुछ भी सार्थक नहीं हुआ, आरोपी द्वारा यह नहीं कहा जा सकता है कि एक्स. पी.-2 में उक्त बयान को नजरअंदाज या अस्वीकार या त्याग दिया जाना चाहिए। केवल इसलिए कि पीडब्लू-10 मलयालम पढ़ना और लिखना नहीं जानते थे, वास्तव में एक्स. पी.-2 की सामग्री को अविश्वास योग्य नहीं बनाता है। दूसरी ओर, वह कहता है कि वह केरल से है और वह मलयालम बोलना जानता है। क्या होना चाहिए था

उसके द्वारा किया गया कार्य गवाह द्वारा अभियुक्त को बताए गए प्रश्न को प्रस्तुत करना था और ऐसे प्रश्नों के दिए गए उत्तरों को अभियुक्त द्वारा बताए गए अनुसार दर्ज करने के लिए पुलिस को बताया जाना था। वास्तव में, सिजू कुरियन वी है।

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

यदि पीडब्लू-10 को एक्स. पी.-2 की विषय-वस्तु के बारे में सुझाव दिया गया हो।

जी गलत है।

20. यह एक्स. पी.-2 के अनुसार इस स्वैच्छिक बयान के अनुसार है कि पुलिस पीडित के शव को खाद के गड्ढे से बरामद करेगी, एच को पीडब्लू-1, पीडब्लू-2, पीडब्लू-4, पीडब्लू-10 और पीडब्लू उत्तराधिकारी प्रवेश के माध्यम से साबित किया गया है जिसे नीचे पढ़ा गया है:

पीडब्लू-1: " मैं उस जगह को दिखाऊंगा जहाँ मैंने जोस सीकाफान की लोहे की छड़ से हत्या की है और उस जगह को जहाँ मैंने उनके शव को दफनाया है।

गड्ढे में।

पीडब्लू-2: " 21.01.2012 पर, मैं किसी व्यक्तिगत काम के कारण केरोडी गाँव गया था। तहसीलदार और पुलिस जीप में वहाँ जा रहे थे। मैंने तहसीलदार को नमस्कार किया। उन्होंने मुझे बताया कि एक मामला है और मुझे अपने साथ जाने के लिए कहा। अभियुक्त ने वहाँ एक जगह दिखाई। उन्होंने दिखाया।

एक जगह और बताया कि नींबू के पेड़ के बगल में स्थित खाद के गड्ढे में एक शव है और बताया कि उसने इसे बंद कर दिया है। मैंने, देवेंद्र और शिवू ने गड्ढे को खोला। गड्ढे को खोदते समय एक कपड़ा मिला और मिट्टी को हटाते समय कपड़े के पीछे एक कंबल मिला और फिर मिट्टी को हटाते समय धीरे-धीरे कंबल से लिपटा एक शव मिला।

पाया गया। "

पीडब्लू-4: " मैंने स्टेनी को बताया है कि मेरे पिता की मृत्यु नहीं हुई है। तुरंत, मैं और मेरे भाई अजीत और रंजीत कुंडापुरा के के. के. शाबू के साथ केरोडी गाँव आए। जब हम उस जगह पर गए तो न तो मेरे पिता थे और न ही मजदूर। हम तुरंत सागर के ग्रामीण पुलिस स्टेशन गए और शिकायत दर्ज कराई। मैंने लापता होने की शिकायत दर्ज नहीं कराई है। हम 21 तारीख को थाने गए और पुलिस सिजू कुरियन से पूछताछ कर रही थी। गवाह ने आरोपी को दिखाया और उसकी पहचान सिजू कुरियन के रूप में की। अभियुक्त ने

पुलिस के सामने कहा है कि उसने मेरे पिता की हत्या कर दी है सिर पर लोहे की छड़ से हमला किया और शव को कंबल से लपेटकर गड्ढे में दफना दिया। आरोपी ने बताया कि

वह स्थान दिखाएँगे जहाँ उन्होंने शव को दफनाया था और इसलिए हमारा नेतृत्व किया और वह स्थान दिखाएँगे जहाँ उन्होंने शव को दफनाया था। आरोपी ने घटना स्थल दिखाया है। वह हमें उस जगह ले गया और उस जगह को दिखाया जहाँ मेरे पिता सो रहे थे।

बाद में उन्होंने हमें वह स्थान दिखाया जहाँ शव को दफनाया गया था। फिर, तहसीलदार की उपस्थिति से पहले, शव

एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

पीडब्लू-10: " 21.01.2012 पर, सुंदर नामक एक दफेदार ने मुझे बताया कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को चाहता है जो मलयालम जानता हो और उसने जाने का अनुरोध किया

केवल। उन्होंने बताया कि शव को दफनाने के बाद वह वहीं रह रहे थे। उसने कहा कि उसने पैसे कमाने के लिए हत्या की थी उपकरणों को बेचना। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने जमीन बेचने के बारे में भी सोचा था।

आरोपी ने कहा कि वह उस जगह को दिखाएगा जहां उसने शव को दफनाया है और लोगों को दिखाएगा कि उसने किसे उपकरण बेचे हैं।

पीडब्लू-25: अपने बयान में, उसने अपराध करने के बारे में स्वीकार किया था और कहा था कि वह उस जगह को दिखाएगा जहां शव को दफनाया गया था।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि साक्ष्य की धारा 25 को देखते हुए पीडब्लू-25 का उपरोक्त स्वीकारोक्ति पूरी तरह से स्वीकार्य नहीं है।

एकट करें। हालाँकि, साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के साथ पढ़ी जाने वाली धारा 8 के अनुसार, स्वीकारोक्ति का वह हिस्सा जिसके कारण पीड़ित का शव बरामद हुआ

स्वीकार्य, अभियुक्त के कहने पर बरामद मृतक की अन्य वस्तुओं के अलावा कई लोगों द्वारा उनकी पहचान की गई है।

स्वतंत्र रूप से गवाह। इसने उच्च न्यायालय सिजू कुरियन बनाम को भी राजी किया है।

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

मान लीजिए कि एक्स. पी.-2 के तहत दर्ज किए गए कथन को स्वीकार्य होने के रूप में अत्यधिक असंभव नहीं माना जा सकता है। कुछ लेख

स्वीकारोक्ति बयान के बल पर बरामद-EX. P. अभियुक्त द्वारा और इस तरह की वसूली को साबित करने के लिए

जिनका अभियोजन पक्ष द्वारा परीक्षण किया गया है

निम्नलिखित प्रभाव के लिए अपदस्थ किया गया और इसने उच्च न्यायालय के निष्कर्षों को स्वीकार करने के लिए भी राजी किया है।

पीडब्लू-3-श्री राघवेंद्र (पंच गवाह) ने बयान दिया है

इसके अंतर्गत: जब लिजो बाहर आया तो पुलिस ने पूछा कि क्या आरोपी ने उसे कोई सामान दिया है, जिसके लिए लिजो ने स्वीकार किया और बताया कि उसने उसे कुछ सामान दिए हैं। लिजो ने उक्त वस्तुओं को पुलिस के सामने पेश किया। लिजो ने अलमारी बनाई,

सूटकेस, टोकरी और कुदाल। लिजो ने अलमारी, सूटकेस, टोकरी और कुदाल का उत्पादन किया। उन्होंने पूरी तरह से 4 टोकरी बनाई।

पीडब्लू-9 श्री सुनील कुमार ने अपने साक्ष्य में कहा है कि

" जब हम कफन की जमीन पर गए तो आरोपी वहां था। अभियुक्त ने मलयालम में कहा कि हम बेच देंगे

उपकरण और केरियप्पा बहुत कम समझते थे।

मलयालम। उन्होंने बताया कि रबर रोलर मशीन बिक्री के लिए है।

चूंकि इसकी कीमत महंगी थी, इसलिए मैंने खरीदने से इनकार कर दिया और जब हम लौट रहे थे, तो उन्होंने घर के सामने उपकरणों का ढेर लगा दिया था। उसने कहा कि वह उसे भी बेच देगा। उन्होंने लिखा और उन उपकरणों की कीमत रुपये के रूप में दिखाई। 2,500 / - . मैंने लिखा और रुपये दिखाए। 2,000 / - . आरोपी इसके लिए सहमत हो गया और उपकरण बेच दिया। हमने इसे खरीद लिया। मैंने 12 कुदाल, एक लोहे की छड़, और एक हैंडसॉ, दो पानी के ड्रम खरीदे हैं जिनमें से एक में डक्कन था और दूसरे में कीट नियंत्रण छिड़काव मशीन नहीं थी।

पीडब्लू-10-कुंजली ने कहा है कि

..... जब मैं वहाँ गया तो पुलिस और पंच वहाँ थे।

स्टेशन और आरोपी और वहाँ भी। वहाँ से आरोपी हमें भीमनेरी ले गए। मुझे नाम याद नहीं है

वह व्यक्ति जिसके घर वह हमें ले गया। मैंने अनुवाद किया है।

अभियुक्त ने मलयालम से जो कुछ भी कहा है

कन्नड़ भाषा। एक अलमारी, सूटकेस, बैंक चेक [2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बुक एंड पास बुक, 4-5 टोकरी और एक कुदाल और

उस स्थान पर दस्तावेज़ थे और उन्होंने इसकी पहचान की है और उन्हें M.O.23-32 के रूप में चिह्नित किया गया है।

(घ)

" मेरा लिजो से परिचय है। मुझे पानी की टंकी की जरूरत थी और मैंने इस मामले की जानकारी लिजो को दे दी है। उन्होंने मुझे बताया कि एक पानी की टंकी बिक्री के लिए है। यह एक पुरानी पानी की टंकी थी। बाद में लिजो मुझे जोस कफान के बगीचे में ले गया और पानी की टंकी दिखाई। उसने रुपये वसूल किए। 15,000 / - लेकिन मैंने कहा कि मैं रुपये दूंगा। 12,000 / - . लिजो इसके लिए सहमत हो गया। ये सब दिसंबर 2011 के महीने में हुआ। बाद में मैंने दिया। रु. 12,000 / - और पानी की टंकी खरीद ली। मैंने वह सेबस्टियन को दे दिया क्योंकि उसने शादी के लिए पानी संरक्षित करने के लिए कहा था।

20.1 वास्तव में, अभियुक्त ने रबर रोलिंग मशीन को एक रुपये में बेच दिया था।

पीडब्लू-11 के पक्ष में Rs.27,000, जिसे एमओ के रूप में चिह्नित किया गया

डी एम ओ 44। एम. ओ. 43 और एम. ओ. 44 की बिक्री का तथ्य भी सामने आया है।

पीडब्लू-5 के माध्यम से। यह निकालने के लिए उपयुक्त और उचित होगा

पीडब्लू-5 का निर्धारण जो निम्नलिखित प्रभाव के लिए है:

पीडब्लू-5: " <ID1] शाम को बाबू ने मुझे फोन किया और बताया कि रबर रोलर मशीन लिंगदहल्ली में बिक्री के लिए है।

और वह इसे खरीदने के बारे में सोच रहा है। उन्होंने मेरा सुझाव इसलिए माँगा क्योंकि उस मशीन की कीमत रु। 30,000 / - . मैंने उसे नहीं खरीदने के लिए कहा

तुरंत लेकिन एक समझौता तैयार करने के बाद अगले दिन खरीदने के लिए

वकील के साथ।

बाद में हम तीनों अर्थात् मैं, बाबू और आरोपी बीनू लिंगदहल्ली गए। वहाँ हम उदय कुमार के घर गए, जो

की खरीद के संबंध में एक समझौता तैयार करने का अनुरोध किया गया रोलर मशीन।

वह हमें जोस कफान के बगीचे में ले गया और दिखाया था

रबर रोलर मशीन। उस समय अंधेरा था। बाद में हम उसी ऑटो में बाबू की नली के पास गए। हम ऑटो में मशीन ले गए

और बाबू के घर में रखा गया। मैंने जोस कफान के बारे में पूछा।
अस्वस्थ हैं और इसलिए वह अस्पताल में हैं

अभियुक्त। उन्होंने बताया कि वह

केरल में और वह अपने हाथ और पैर नहीं हिला सकता और केवल कर सकता है
हिलाता है और इसलिए वह एर्नाकुलम अस्पताल में है। सिजू कुरियन बनाम।

अपना सिर

कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

पीडब्लू-7: " मैंने पूछा कि क्या मालिक ठीक है और आरोपी ने बताया कि वह ठीक है और केरल चला गया था। उन्होंने खर मशीन के बारे में जानकारी दी और मुझे केवल इसे खरीदने के लिए कहा। मैंने कहा कि मुझे यह नहीं चाहिए और मैं उसे उन लोगों के बारे में बताऊंगा जो इसे खरीदना चाहते हैं। मैंने कहा कि मुझे उस सौदे के लिए मालिक की जरूरत है। उस समय आरोपी ने बताया कि मालिक की तबीयत ठीक नहीं है। उसने बताया कि उसके इलाज के लिए पैसे की जरूरत है, जिसके लिए वह इसे बेच रहा है। इसलिए, अगले दिन मैं और सुनील कुमार जोस कफन की उद्यान भूमि पर गए। हमने खर रोलर मशीन देखी। अभियुक्त ने बताया कि इसकी कीमत रु। 50,000 / - हम पूछते हैं

रु. 30,000 / - . हमने इसे नहीं खरीदा बल्कि वापस आ गए।

20.2 वास्तव में मृतक की भूमि को अभियुक्त द्वारा पीडब्लू-5 को देने का प्रयास किया गया था और जो अनियंत्रित साक्ष्य अभिलेख पर सक्षम है, वह नीचे दिए गए प्रभाव से होगा:

पीडब्लू-5: " उन्होंने बताया कि वे कोई कृषि कार्य नहीं करेंगे और संपत्ति बेचना चाहते हैं और मुझसे यह बताने के लिए कहा कि क्या कोई इसे खरीदना चाहता है। मैं इसके लिए सहमत हो गया और कहा कि अगर कोई पक्ष इसे खरीदने के लिए तैयार है तो मैं सूचित करूंगा। उसने बताया कि बीनू कन्नड़ नहीं जानता है और उसका किसी से कोई परिचय नहीं है। इसलिए,

उन्होंने मुझे अभिलेख रखने और संरक्षित करने के लिए कहा।

पीडब्लू-8: " उन्होंने बैंगनी रंग की कमीज पहने व्यक्ति की पहचान जोस कफन के रूप में की है। दिसंबर 2011 के महीने में, बिसू ने बताया था कि कफन की साढ़े चार एकड़ कृषि भूमि बिक्री के लिए है। लिजो ने बिसू को इस बारे में बताया था। खरीद के संबंध में सलाह प्राप्त करने के लिए

कहा खेत की जमीन, मैं, लिजो और मेरे जीजा बिसू नागराज से मिले,

जो एक वकील है। लिजो के पास दस्तावेज़ थे। अधिवक्ता ने दस्तावेजों की जांच की। लिजो ने बताया कि श्री जोस कफन की मृत्यु हो गई है। दस्तावेजों को देखकर, अधिवक्ता

बताया कि कफन का मृत्यु प्रमाण पत्र आवश्यक है और इसके लिए

पहचान के उद्देश्य से उसके पहचान पत्र या लाइसेंस की आवश्यकता होती है और

जमीन बेचने के लिए कफन के बेटे को आना पड़ता है। बाद में हम अधिवक्ता के घर से बस स्टैंड गए। मैं भी बस स्टैंड गया। लिजो और बिसू बाइक पर गए। बाद में, 5 मिनट के बाद लिजो ने मुझे फोन किया और बस स्टैंड में रहने के लिए कहा और कहा कि कफन के बेटे ने फोन किया है और वे उससे सीधे बात कर सकते हैं। वे बस स्टैंड पर पहुंचे। उन्होंने फोन किया और मुझे मोबाइल दिया। फोन करने वाले व्यक्ति ने अग्रिम [2023] 4 एस. सी. आर. देने के लिए कहा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बीनू को एक लाख रुपये की राशि। फोन करने वाले व्यक्ति ने बताया कि वह कफन का बेटा साजिश है। उन्होंने बताया कि जमीन की कीमत 10 लाख है। मैंने कहा कि मैं केरल को अग्रिम राशि ले जाऊंगा। उस समय उन्होंने मुझसे बीनू को अग्रिम राशि देने के लिए कहा। लिजो ने कमीशन माँगा। उसने लिजो को एक लाख रुपये देने के लिए कहा। इसके लगभग दो-तीन दिन बाद, मेरे बहनोई बिसू मंकलाले गए थे, जहाँ कोलाथुर जोस रह रहे थे। वह जोस कफान का रिश्तेदार है।

लिजो ने कोलाथुर जोस को बताया कि जोस कफान की मृत्यु हो गई है और उनके बेटे उनकी जमीन बेच रहे हैं। तब कोलाथुर जोस ने बताया कि जोस कफान

वह मरा नहीं है और वह कफन के बच्चों से बात करता और हमें इसके बारे में बताता। पीडब्लू-9: " जब हम कफन की जमीन पर गए तो आरोपी वहाँ था। आरोपी ने मलयालम में कहा कि वह उपकरण बेच देगा और केरियप्पा को मलयालम भाषा की बहुत कम समझ थी।

केरियप्पा ने मलयालम को थोड़ा समझकर समझाया। उन्होंने बताया कि रबर रोलर मशीन बिक्री के लिए है। चूंकि इसकी कीमत महंगी थी, इसलिए मैंने खरीदने से इनकार कर दिया और जब हम लौट रहे थे, तो उन्होंने घर के सामने उपकरणों का ढेर लगा दिया था। उसने कहा कि वह उसे भी बेच देगा। उन्होंने उन उपकरणों की कीमत लिखी और दिखाई: रु. 2,500 / - मैंने लिखा और रुपये दिखाए। 2,000 / - . आरोपी इसके लिए सहमत हो गया और उपकरण बेच दिया। हमने इसे खरीद लिया। मैंने 12 कुदालें खरीदी हैं-एक लोहे की छड़, एक हैंडसॉ, दो पानी के ड्रम जिसमें ढक्कन था और दूसरे में कीट नियंत्रण छिड़काव मशीन नहीं थी। हमने सभी वस्तुओं को स्थानांतरित कर दिया और मैंने केरियप्पा को वह ड्रम दिया जिसमें कोई ढक्कन नहीं था। बाकी मैंने ले लिया।

पीडब्लू-11: " दिसंबर 2011 के महीने में रबर रोलर मशीन के बारे में बताया गया था। बताया गया कि मशीन केरोडी में किसी के घर में है। मैं और सुनील कुमार मशीन देखने गए और आरोपी वहाँ था। आरोपी ने अपना नाम बीनू बताया। उन्होंने अपना परिचय कफन के छोटे भाई के बेटे के रूप में दिया। उन्होंने कहा कि रबर रोलर मशीन बिक्री पर है और बताया कि इसकी कीमत रु. 30,000 / - . मैं मशीन खरीदने के लिए सहमत हो गया और बातचीत के बाद इसे खरीदने का फैसला किया गया।

रुपये की राशि के लिए। 27,000 / - . हम उसी दिन वापस आए थे। मैंने लिजो को मशीन खरीदने के बारे में सूचित किया था। लिजो मेरे जीजा हैं और उन्होंने इसके लिए एक समझौता तैयार करने के लिए कहा।

सिजू कुरियन बनाम। कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

हम उनके घर गए थे। उन्होंने एक श्वेत पत्र पर समझौते की सामग्री लिखी। मैंने, बीनू और लिजो ने उक्त दस्तावेज़ पर अपने हस्ताक्षर किए थे। आरोपी स्वयं बीनू है। गवाह M.O.41-समझौते में अभियुक्त के अपने हस्ताक्षर की पहचान करता है। गवाह अपने हस्ताक्षर की भी पहचान करता है। गवाह के हस्ताक्षर को M.O.41 (b), अभियुक्त के हस्ताक्षर को M.O.41 (c) और लिजो के हस्ताक्षर को M.O.41 (a) के रूप में चिह्नित किया गया है। बिक्री समझौता रुपये में तैयार किया गया था। 30,000 / - लेकिन मैंने केवल रुपये दिए। 27,000 / - . "

पीडब्लू-13: " 07.01.2012 पर, मैं अपनी पत्नी और बेटे के साथ विगेश्वर अस्पताल गया क्योंकि मेरा बेटा अस्वस्थ था। लिजो भी अस्पताल आया था क्योंकि उसका बेटा भी अस्वस्थ था। मैं लिजो को बहुत पहले से जानता हूँ। बात करते हुए, लिजो ने मुझे बताया कि जोस कफन मर चुका है। उन्होंने मुझे बताया कि कफन पक्षाघात से पीड़ित थे

बीमारी और उसका बेटा उसे इलाज के लिए केरल ले गए और जब से केरल में बीमारी गंभीर हो गई, वह बेहतर इलाज के लिए कफन को अमेरिका ले गए लेकिन क्रिसमस के त्योहार से दो दिन पहले कफन की मृत्यु हो गई। लिजो ने यह भी बताया कि उनके शव को वापस नहीं लाया गया था, बल्कि उनका अंतिम संस्कार वहीं किया गया था।

बाद में, कई दिनों के बाद मैं अपनी बाइक की मरम्मत के लिए सेंचुरी मोटर्स गया। लिजो भी वहाँ था। लिजो ने मुझे बताया कि कफन के बच्चों का इरादा उसकी जमीन बेचने का है और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं इसे खरीदने में रुचि रखता हूँ। मैंने लिजो से कहा कि मैं नहीं करता

चाहते हैं और इसके बारे में अपने बहनोई को सूचित करेंगे। 2 दिनों के बाद लिजो ने मुझे जमीन की कीमत और अपने बारे में बताया।

कमीशन। बाद में लिजो ने मुझे बताया कि उसके पास भूमि के दस्तावेज हैं। चूंकि मैंने कहा कि मुझे अधिवक्ता से सुझाव लेना है, इसलिए मैं और मेरे जीजा, स्टेनी और लिजो उक्त दस्तावेजों के साथ अधिवक्ता नागराज के घर गए। अधिवक्ता नागराज ने दस्तावेजों की जांच की और चूंकि अधिवक्ता को सूचित किया गया कि जोस कफन की मृत्यु हो गई है, इसलिए उन्होंने सूचित किया कि कफन के बच्चों को आना होगा और सभी उत्तराधिकारियों से पावर ऑफ अटॉर्नी और कफन का मृत्यु प्रमाण पत्र भी लाना होगा। हम अपने-अपने घर गए।

अधिवक्ता की नली से घर। जब तक मैं मारी मंदिर पहुँचा, मैंने एक बार फिर लिजो को फोन किया। लिजो ने मुझे बताया कि कफन के बेटे ने उसे फोन किया था और मुझे यह कहते हुए वहाँ जाने के लिए कहा था कि कफन के बेटे साजिथ ने उसे फोन किया था।

[2023] 4 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

स्टेनी फिर से कोर्ट के पास गई। लिजो वहाँ था और उस समय लिजो को एक फोन आया और उसने बात की और फिर स्टेनी को मोबाइल फोन दिया। स्टेनी ने सीधे बात की और वह व्यक्ति जो बात कर रहा था

फोन पर बताया गया कि वह अग्रिम राशि लेने के लिए सागर आएगा। उसने यह भी कहा कि वह फोन बनाकर आएगा।
कॉल करें। "

पीडब्लू-15: " 17 साल से मैं सागर में एक वकील के रूप में काम कर रहा हूँ। मेरा मारूर गाँव के बाबू से परिचय है। वह शाम को लगभग 09.12.2011 पर मेरे घर आया था। उक्त बाबू के साथ उसके चाचा और आरोपी भी थे।

न्यायालय के समक्ष। गवाह को Ex.P.21 दिखाया गया था। उसके पास है

उस व्यक्ति की पहचान की गई जिसके पास Ex.P.21 में दस्तावेज़ हैं

बाबू के बहनोई के रूप में फोटो। मेरे घर आए बाबू ने मुझे बताया कि आरोपी के पास रबर रोलर मशीन है और वह इसे खरीद रहा है। उन्होंने मुझे इस संबंध में एक बिक्री समझौता तैयार करने के लिए कहा। मैंने उनसे रबर रोलर मशीन की कंपनी, उसके मालिक, उसका नंबर और अन्य विवरणों के बारे में पूछा, जिसके लिए उन्होंने कहा कि उनके पास वे सभी विवरण नहीं हैं।

उनसे दी गई जानकारी के अनुसार, मैंने चल संपत्ति की बिक्री का समझौता तैयार किया। गवाह दिखाया गया था

एमओ. 41. वह इसकी पहचान उस बिक्री समझौते के रूप में करता है जिसे तैयार किया गया था।

उसके द्वारा। रबर रोलर मशीन बेचने वाला आरोपी कन्नड़ नहीं जानता था। मैंने बिक्री समझौता कन्नड़ में और अंग्रेजी में भी पढ़ा। चूंकि आरोपी अंग्रेजी और कन्नड़ दोनों नहीं जानता था, इसलिए लिजो ने बिक्री समझौते की सामग्री का मलयालम भाषा में अनुवाद किया और आरोपी को समझाया। दोनों विक्रेता और विक्रेता ने मेरे सामने अपने हस्ताक्षर किए हैं। आरोपी, जो विक्रेता है, ने अपने हस्ताक्षर किए हैं और विक्रेता ने भी अपने हस्ताक्षर किए हैं। लिजो ने गवाह के रूप में अपने हस्ताक्षर किए हैं।

21. आसपास की अन्य परिस्थितियाँ जो अभियुक्त को उचित संदेह से परे अपराध का दोषी साबित करती हैं, वे हैं - मृतक से संबंधित और अभियुक्त द्वारा बेची गई वस्तुएँ जो अभियुक्त के स्वैच्छिक बयान के आधार पर बरामद की गई थीं।

एक्स. पी.-2 के अनुसार। वास्तव में पीडब्लू-5 ने स्पष्ट रूप से बताया है कि आरोपी का मृतक की अचल संपत्ति को बेचने का इरादा कैसे था। पीडब्लू-5 ने स्पष्ट रूप से बयान दिया है कि कैसे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया था जब वह मृतक की संपत्ति बेचने का प्रयास कर रहा था।

सिजू कुरियन बनाम। कर्नाटक राज्य [अरविंद कुमार, जे.]

22. कि अभियुक्त द्वारा दिए गए बयानों के अलावा कि मृतक केरल गया था या मृतक को लकवा का दौरा पड़ा था या

मृतक अमेरिका चला गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी, सभी गलत और परस्पर विरोधी कथन हैं जैसा कि पीडब्लू-5 द्वारा अपदस्थ किया गया है, जिसका भरोसा उच्च न्यायालय द्वारा कर्नाटक राज्य बनाम में इस न्यायालय के निर्णय की पृष्ठभूमि में रखा गया है। स्वर्णमा 3, और इस प्रकार हमारा विचार है कि उच्च न्यायालय द्वारा लिया गया निष्कर्ष साक्ष्य की उचित सराहना और कानून के उचित अनुप्रयोग पर आधारित है। इसके अलावा, अभियुक्त अपने खिलाफ पाए गए दोषपूर्ण साक्ष्य के संबंध में पूरी तरह से इनकार करने के अलावा स्पष्टीकरण देने में विफल रहा है और इस तरह उच्च न्यायालय ने पट्टू राजन बनाम मामले में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित सिद्धांतों को सही ढंग से लागू किया है। तमिलनाडु राज्य 'अभियुक्त अपीलार्थी के तर्क को अस्वीकार करने के लिए। अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य की उपेक्षा किए जाने और विद्वान सत्र न्यायाधीश द्वारा साक्ष्य की सराहना में पेटेंट विकृति होने के कारण इसके परिणामस्वरूप उच्च न्यायालय द्वारा हस्तक्षेप किया गया। हम उच्च न्यायालय के फैसले में हमारे हस्तक्षेप की मांग करने वाली कोई सामग्री अनियमित रूप से नहीं पाते हैं। उच्च न्यायालय द्वारा सही परिप्रेक्ष्य में पूरे साक्ष्य की पुनः मूल्यांकन करने पर इसका परिणाम एक सही निष्कर्ष पर पहुंचा है। कि अकेले आरोपी ने मृतक श्री जोस सी. कफन की हत्या की है और कोई अन्य संभावित दृष्टिकोण नहीं है

जिसे परिस्थितियों की श्रृंखला के संबंध में अनुपस्थित माना जा सकता है, इस न्यायालय का विचार है कि अपील को गुणदोष के रूप में खारिज किया जाना चाहिए।

23. ऊपर बताए गए कारणों के लिए हम अपील को खारिज करते हैं और 2014 की आपराधिक अपील No.335 में कर्नाटक उच्च न्यायालय द्वारा पारित 20.03.2020 के फैसले की पुष्टि करते हैं।

या

चिका खारिज कर दी गई।

8 (2015) 1 एससीसी 323

9 9 (2019) 4 एस. सी. सी. 771